

सिविल सर्विसेज़

क्रॉनिकल

1990 से आईएएस अभ्यर्थियों की नं. 1 पत्रिका



UPSC सिविल सेवा प्रारंभिक परीक्षा

CSAT विशेषांक

मॉडल टेस्ट पेपर

सामान्य अध्ययन, पेपर-1 एवं पेपर-2

आलेख

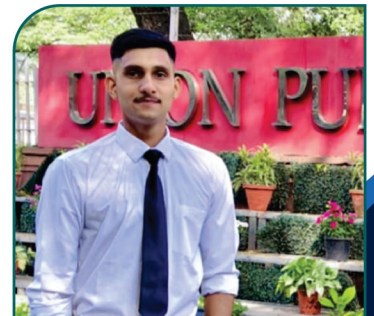
- सोशल मीडिया और किशोरों की सुरक्षा: Meta समझौता और भारत के लिए सबक
- NSE का प्रस्तावित IPO: सेल्फ-लिस्टिंग और नियामकीय चुनौतियां
- डिजिटल हवाला: तकनीक के साथ बदलता भूमिगत बैंकिंग तंत्र
- COP31: वैश्विक जलवायु कूटनीति की अग्निपरीक्षा
- भारत के फार्मास्यूटिकल क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की चुनौती
- इन्फोडेमिक और जनता का विश्वास

इन फोकस मुद्दे

- ❖ भारत का अनुसंधान विरोधभास
- ❖ स्कूलों में जनरेटिव एआई
- ❖ भारत के कपड़ा उद्योग का हरित भविष्य
- ❖ IBC में 'डीप हेयरकट' और ऋणदाताओं की चिंता
- ❖ मणिपुर में जनगणना स्थगन, NRC और परिसीमन का विवाद



आर्यन श्योराण
AIR 2, CAPF 2025



भूपेंद्र सिंह
AIR 127, CAPF 2025

इस अंक में



71

UPSC सिविल सेवा परीक्षा CSAT विशेषांक

तैयारी से सफलता तक

सिविल सेवा अभिक्षमता परीक्षा (CSAT) UPSC प्रारंभिक परीक्षा का एक महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण प्रश्न-पत्र है। यद्यपि इसे उत्तीर्ण करने के लिए 33 अंक आवश्यक हैं, किंतु कॉम्प्रिहेंशन, तार्किक तर्कशक्ति, मात्रात्मक अभिक्षमता और डेटा इंटरप्रिटेशन के प्रश्नों की बढ़ती जटिलता के कारण प्रभावी तैयारी आवश्यक हो गई है। यह विशेषांक CSAT के बदलते पैटर्न, प्रश्नों के रुझान और कठिनाई स्तर का विश्लेषण करते हुए आवश्यक कौशलों को रेखांकित करता है तथा अवधारणात्मक स्पष्टता, नियमित अभ्यास, समय-प्रबंधन, सटीकता और विवेकपूर्ण प्रश्न-चयन पर आधारित रणनीति प्रस्तुत करता है।

आलेख

- 08 सोशल मीडिया और किशोरों की सुरक्षा: Meta समझौता और भारत के लिए सबक
- 09 NSE का प्रस्तावित IPO: सेल्फ-लिस्टिंग और नियामकीय चुनौतियां
- 10 डिजिटल हवाला: तकनीक के साथ बदलता भूमिगत बैंकिंग तंत्र
- 11 COP31: वैश्विक जलवायु कूटनीति की अग्निपरीक्षा
- 12 भारत के फार्मास्युटिकल क्षेत्र में आत्मनिर्भरता की चुनौती
- 13 इन्फोडेमिक और जनता का विश्वास

इन फोकस

- 14 भारत का अनुसंधान विरोधाभास: मात्रा से वास्तविक दुनिया के प्रभाव तक
- 15 स्कूलों में जनरेटिव एआई: प्रतिबंध, विनियमन या एकीकरण?
- 16 भारत में कपड़ा उद्योग का हरित भविष्य
- 17 IBC में 'डीप हेयरकट' और ऋणदाताओं की चिंता
- 18 मणिपुर में जनगणना स्थगन, NRC और परिसीमन का विवाद

5 साक्षात्कार : आर्यन श्योराण
CAPF 2025 ऑल इंडिया रैंक-2

7 साक्षात्कार : भूपेंद्र सिंह
CAPF 2025 ऑल इंडिया रैंक-127

एथिकल स्कैन	19
निबंध	22
मुख्य परीक्षा मॉडल हल प्रश्न पत्र	25
विचार बिंदु	27
मासिक प्रश्न-परिचर्चा	28

नियमित स्तंभ

राष्ट्रीय परिदृश्य

- ♦ केंद्र द्वारा स्टेम सेल थेरेपी के नियमन पर निर्देश जारी 29
- ♦ भारत में वैश्विक शुष्क भूमि कांग्रेस 2026..... 29
- ♦ यूआईडीएआई ने आधार फेस ऑथेंटिकेशन एसडीके लॉन्च किया.. 29
- ♦ कोयला कंपनियों के लिए प्रथम सीएसआर ढांचा लॉन्च 30
- ♦ भारत वैश्विक 6जी नेटवर्क पहल में शामिल..... 30

आर्थिक परिदृश्य

- ♦ रूस से तेल आयात पर अमेरिकी दबाव..... 33
- ♦ IBC में धोखाधड़ी पर ED की नजर 33
- ♦ तांबे की कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी..... 33
- ♦ भारत-EU FTA: स्टील के लिए टैरिफ-रेट कोटा 33

राज्यव्यवस्था एवं शासन

- ♦ निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति पर मामला बड़ी पीठ के समक्ष..... 37
- ♦ अनुच्छेद 22(1) और अवैध गिरफ्तारी 37
- ♦ लद्दाख के लिए प्रस्तावित अनुच्छेद 371K..... 37

साक्षात्कार

आर्यन श्योराण

CAPF 2025

ऑल इंडिया रैंक-2



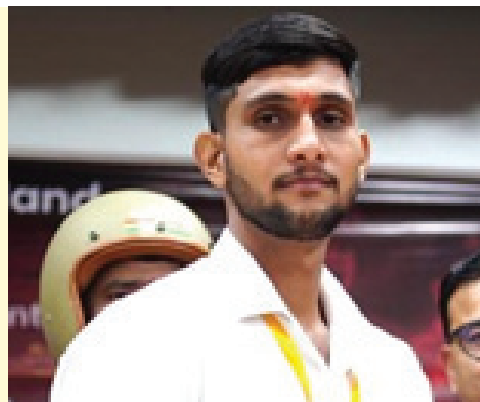
- सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल की ओर से आपकी शानदार सफलता पर हार्दिक बधाई। सबसे पहले अपने बारे में बताइए।
- **आर्यन श्योराण:** बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं मूल रूप से भिवानी, हरियाणा का रहने वाला हूँ और वर्तमान में द्वारका, दिल्ली में रहता हूँ। मेरे परिवार में माता-पिता, मैं और मेरा छोटा भाई है। मेरे पिता CRPF की 118वीं बटालियन में हेड कांस्टेबल/ड्राइवर हैं और वर्तमान में गुंड, गांदरबल, जम्मू-कश्मीर में तैनात हैं। मेरी मां गृहिणी हैं।
 - मैंने 10वीं और 12वीं की पढ़ाई CRPF पब्लिक स्कूल, प्रशांत विहार, रोहिणी से की। 11वीं-12वीं में PCM के साथ कंप्यूटर साइंस था। इसके बाद दिल्ली विश्वविद्यालय के दयाल सिंह इवनिंग कॉलेज से इतिहास और राजनीति विज्ञान के साथ बी. ए. प्रोग्राम किया। मुझे सेल्फ-हेल्प तथा फिक्शन/फैंटेसी पुस्तकें पढ़ना, फिल्में एवं सीरीज देखना, क्रिकेट खेलना, नई जगहों की यात्रा करना और मेडिटेशन पसंद है।
 - **सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** वर्दीधारी सेवाओं के प्रति आपका आकर्षण कैसे विकसित हुआ और CAPF को क्यों चुना?
 - **आर्यन श्योराण:** मैं शुरू से सशस्त्र बलों में जाना चाहता था। वर्दी और उसके साथ मिलने वाला सम्मान मुझे आकर्षित करता था। मेरे पिता स्वयं CRPF में हैं और उनसे सैन्य बलों में अधिकारियों को मिलने वाले सम्मान के बारे में सुनकर भी मुझे इस दिशा में आगे बढ़ने की प्रेरणा मिली।
 - मैंने NDA की छह बार, CDS की चार बार और AFCAT की दो बार परीक्षा दी। इस दौरान कुल 12 बार सर्विसेज सिलेक्शन बोर्ड (SSB) की चयन प्रक्रिया का सामना किया, लेकिन अंतिम सफलता नहीं मिल सकी। इसके बाद मैंने CAPF (Assistant Commandant) को चुना, क्योंकि इसकी प्रकृति भी मेरे वर्दीधारी सेवा में जाने के लक्ष्य के काफी करीब थी। CAPF में यह मेरा पहला प्रयास था और इसी में AIR-2 प्राप्त करना मेरे लिए बेहद खास है।
 - **सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** CAPF में आपकी पहली वरीयता CISE क्यों है?
 - **आर्यन श्योराण:** मेरी पहली वरीयता CISE है। इसका मुख्य कारण इसमें अपेक्षाकृत तेज पदोन्नति की संभावनाएं और पारिवारिक जीवन के साथ बेहतर संतुलन है। इन्हीं कारणों से मैंने CISE को पहली वरीयता दी है।
 - **सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** आपकी दैनिक दिनचर्या और तैयारी की रणनीति कैसी थी?
 - **आर्यन श्योराण:** मेरी दिनचर्या संतुलित थी। दिन की शुरुआत दौरे लगाने से करता था, उसके बाद व्यायाम और मेडिटेशन करता था। फिर लाइब्रेरी जाकर दोपहर लगभग 12:30 बजे तक पढ़ता था। लंच के बाद दोबारा लाइब्रेरी जाता और शाम करीब 7 बजे तक अध्ययन करता था।
 - मैं Paper I की प्रैक्टिस और Paper II के बीच समय बांटता था। Paper II में विशेष रूप से सामान्य अध्ययन, करंट अफेयर्स, निबंध और कॉम्प्रिहेंशन पर ध्यान था। लगभग सात महीनों तक समाचार-पत्र, क्रॉनिकल पत्रिका और विजन की मैगजीन से अपने Paper II के नोट्स बनाए। अंतिम एक महीने में मुख्य रूप से मॉक टेस्ट और रिवीजन पर ध्यान केंद्रित किया।
 - **सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** आपने बिना किसी कोचिंग के CAPF परीक्षा की तैयारी की। आपके प्रमुख अध्ययन-संसाधन क्या रहे?
 - **आर्यन श्योराण:** किसी एक संसाधन का नाम लेना कठिन है। मैंने CAPF के लिए किसी कोचिंग संस्थान में नामांकन नहीं लिया था। वर्ष 2021 में अपनी पहली NDA परीक्षा के समय से ही विभिन्न यूट्यूब चैनलों के निःशुल्क वीडियो से पढ़ता रहा हूँ। पिछले पांच वर्षों में दूसरी UPSC और रक्षा परीक्षाओं की तैयारी के कारण मेरा बेस पहले से तैयार था।
 - मेरी सफलता में स्कूली शिक्षा की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही। CRPF पब्लिक स्कूल में अच्छे शिक्षकों के कारण मेरे बेसिक कॉन्सेप्ट काफी स्पष्ट थे, इसलिए CAPF की लिखित परीक्षा में मुझे ज्यादा कठिनाई नहीं हुई।
 - **सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल:** शारीरिक दक्षता परीक्षा की तैयारी को लेकर CAPF अभ्यर्थियों को क्या ध्यान रखना चाहिए?
 - **आर्यन श्योराण:** मेरा मानना है कि शुरुआत से बहुत अधिक कठिन शारीरिक अभ्यास करना जरूरी नहीं है। सीमित लेकिन नियमित फिजिकल एक्टिविटी शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों के लिए लाभदायक है।
 - लिखित परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद दौरे लगाने की अवधि और तीव्रता बढ़ाकर स्प्रिंटिंग पर ध्यान दिया जा सकता है। साथ ही

साक्षात्कार

भूपेंद्र सिंह

CAPF 2025

ऑल इंडिया रैंक-127



- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल** : सिविल सर्विस क्रॉनिकल की ओर से आपकी सफलता पर हार्दिक बधाई। अपने बारे में बताइए।
- **भूपेंद्र सिंह**: धन्यवाद। मैं चरखी दादरी, हरियाणा का रहने वाला हूँ और मैंने रसायन विज्ञान में बी.एससी. ऑनर्स किया है। मेरी प्रमुख रुचि दौड़ना है; मुझे फुटबॉल, वॉलीबॉल, हरियाणवी-पंजाबी संगीत और फिल्में भी पसंद हैं। CAPF AC 2025 के अपने पहले प्रयास में ऑल इंडिया रैंक 127 प्राप्त करना मेरे लिए परिवार, शिक्षकों, मार्गदर्शकों और पिछली असफलताओं से मिली सीख का परिणाम है।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल**: CAPF को चुनने की वजह और आपकी प्रमुख चुनौतियाँ क्या थीं?
- **भूपेंद्र सिंह**: CAPF में नेतृत्व, आंतरिक सुरक्षा, परिचालन जिम्मेदारी और प्रत्यक्ष जनसेवा का संयोजन मुझे आकर्षित करता था। इससे पहले रक्षा परीक्षाओं और SSB में मिले असफलताओं ने मुझे अनुशासन और आत्मविश्लेषण सिखाया। प्रमुख चुनौतियाँ थीं—लंबे समय तक निरंतरता, यह तय करना कि क्या नहीं पढ़ना है, समसामयिकी की बड़ी सामग्री, पिछली असफलताओं से उबरना और दूसरों से तुलना करने से बचना।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल** : CAPF की समग्र रणनीति और दोनों प्रश्नपत्रों की तैयारी कैसे की?
- **भूपेंद्र सिंह**: मेरी रणनीति पाँच सिद्धांतों पर आधारित थी— सीमित स्रोत, बार-बार पुनरावृत्ति, च्ले, नियमित अभ्यास-परीक्षण और निरंतर विश्लेषण।
- **प्रश्नपत्र-I** में व्यापक अध्ययन, तथ्य, अवधारणात्मक समझ और गति जरूरी थी। स्थिर विषयों को PYQs और समसामयिकी से जोड़ा तथा संख्यात्मक योग्यता और तर्कशक्ति में अभ्यास को प्राथमिकता दी। प्रश्नपत्र-II में अभिव्यक्ति, संरचना, विश्लेषण और लेखन-अभ्यास पर ध्यान दिया। निबंध में भूमिका, आयाम, तर्क, उदाहरण/आँकड़े, चुनौतियाँ, समाधान और संतुलित निष्कर्ष की संरचना अपनाई; संक्षेपण और बोधगम्यता में मूल विचार को स्पष्ट और संक्षिप्त रखने का अभ्यास किया।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल**: PYQs, अभ्यास-परीक्षण और अध्ययन-स्रोतों को आप कितना महत्वपूर्ण मानते हैं?
- **भूपेंद्र सिंह**: PYQs बताते हैं कि UPSC किन विषयों को महत्व देता है, प्रश्न कैसे बनते हैं, कितनी गहराई अपेक्षित है और विकल्प हटाने की प्रवृत्ति कैसी है। हर अभ्यास-परीक्षण के बाद गलतियों को ज्ञान की कमी, अवधारणात्मक भ्रम, सामान्य भूल, समय-प्रबंधन और प्रश्न-चयन की गलती में बाँटता था। मेरे लिए परीक्षण से अधिक उसका विश्लेषण महत्वपूर्ण था।

- राज्यव्यवस्था के लिए एम. लक्ष्मीकांत, आधुनिक इतिहास के लिए स्पेक्ट्रम, भूगोल के लिए NCERT तथा अन्य विषयों में सीमित मानक स्रोत का उपयोग किया।
- अगर समसामयिकी की बात की जाये तो इसे मैं स्थिर ज्ञान का विस्तार मानता था। किसी घटना को अलग से याद करने के बजाय उसे संविधान, भूगोल, अर्थव्यवस्था, अंतरराष्ट्रीय संबंध या आंतरिक सुरक्षा से जोड़ता था। इसके लिए मैंने क्रॉनिकल पत्रिका के साथ-साथ कुछ अन्य ऑनलाइन माध्यमों का उपयोग किया।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल**: आपकी दिनचर्या और शारीरिक सक्रियता की क्या भूमिका रही?
- **भूपेंद्र सिंह**: तैयारी के चरण के अनुसार लगभग 6-8 घंटे की वास्तविक एकाग्र पढ़ाई का लक्ष्य रखता था। दिन की शुरुआत अक्सर दौड़ने से होती थी। इसके बाद सामान्य अध्ययन के विषय, समसामयिकी, पुनरावृत्ति और अभ्यास-परीक्षण के लिए दैनिक -सत्र निर्धारित करता था। मेरा मानना है कि छह एकाग्र घंटे बारह बिखरे हुए घंटों से अधिक उपयोगी हो सकते हैं। प्रेरणा बदलती रहती है, इसलिए मैंने अनुशासन पर भरोसा किया।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल**: साक्षात्कार की तैयारी आपने कैसे की?
- **भूपेंद्र सिंह**: मैंने साक्षात्कार को ज्ञान-परीक्षा के बजाय व्यक्तित्व के आकलन के रूप में देखा। DAF के हर शब्द से संभावित प्रश्न बनाए। चरखी दादरी और हरियाणा के भूगोल, अर्थव्यवस्था, कृषि, सामाजिक मुद्दों, जल संबंधी चिंताओं, युवाओं, औद्योगिक विकास और सुरक्षा से जुड़े विषय पढ़े। रसायन विज्ञान की मूल अवधारणाओं और राष्ट्रीय विकास में विज्ञान की भूमिका पर भी तैयारी की। अभ्यास-साक्षात्कारों ने विशेष रूप से राकेश निखन के मार्गदर्शन में 'दी इनविजिबल हेल्पिंग हैंड' ने कई कमियाँ पहचानने में मदद की।
- **सिविल सर्विस क्रॉनिकल**: CAPF अभ्यर्थियों के लिए आपका अंतिम संदेश क्या है?
- **भूपेंद्र सिंह**: बार-बार किताबें, पीडीएफ, शिक्षक और रणनीतियाँ बदलने से बचें। वैकल्पिक योजना (Plan B) रखें, लेकिन उसे मुख्य लक्ष्य के प्रति कमजोर प्रतिबद्धता का बहाना न बनने दें। चिंता के बजाय आज के नियंत्रित कार्यों पर ध्यान दें।
- असफलता एक घटना है, आपकी पहचान नहीं। हर दिन स्वयं से पूछें—“क्या मैं कल की तुलना में आज बेहतर तैयार हूँ?” यदि उत्तर लगातार ‘हाँ’ है, तो आगे बढ़ते रहें। मेरे लिए सहायक कमांडेंट बनना ईमानदारी से नेतृत्व करने, साहस से सेवा करने और राष्ट्र तथा अपने अधीन लोगों के प्रति जवाबदेह रहने की जिम्मेदारी है।
- सिविल सर्विस क्रॉनिकल की ओर से आप को उज्ज्वल भविष्य के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ। ■■

NSE का प्रस्तावित IPO

सेल्फ-लिस्टिंग और नियामकीय चुनौतियां

NSE के IPO से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या NSE के शेयर भविष्य में NSE के ही प्लेटफॉर्म पर कारोबार कर सकेंगे।

ल गभग एक दशक की नियामकीय देरी के बाद नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (NSE) अपना प्रारंभिक सार्वजनिक निर्गम (IPO) लाने की दिशा में आगे बढ़ रहा है। प्रस्तावित IPO से लगभग ₹30,000 करोड़ जुटाए जाने की संभावना है, जिससे यह भारत के इतिहास का सबसे बड़ा IPO बन सकता है। इससे संस्थागत और खुदरा निवेशकों के बीच काफी रुचि पैदा हुई है। हालांकि, NSE के IPO से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण प्रश्न यह है कि क्या NSE के शेयर भविष्य में NSE के ही प्लेटफॉर्म पर कारोबार कर सकेंगे।

सेल्फ-लिस्टिंग की नियामकीय चुनौती

मौजूदा SEBI नियमों के अनुसार कोई स्टॉक एक्सचेंज अपने ही प्लेटफॉर्म पर अपने शेयर सूचीबद्ध नहीं कर सकता। इसका मुख्य कारण हितों का टकराव (Conflict of Interest) है। स्टॉक एक्सचेंज स्वयं अपने प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध कंपनियों के लिए प्रथम-स्तरीय नियामक की भूमिका निभाता है। यदि वह अपने ही शेयरों को सूचीबद्ध और विनियमित करे, तो नियामकीय निष्पक्षता पर सवाल उठ सकते हैं।

इसी समस्या के समाधान के लिए NSE ने Permitted to Trade (PTT) व्यवस्था का प्रस्ताव रखा है। इसके तहत NSE के शेयर पहले BSE पर सूचीबद्ध होंगे। इसके बाद NSE, SEBI से अपने शेयरों को NSE के प्लेटफॉर्म पर सूचीबद्ध किए बिना कारोबार की अनुमति देने का अनुरोध करेगा। BSE प्राथमिक सूचीबद्धता मंच रहेगा और मुख्य अनुपालन जिम्मेदारी उसी की होगी।

NSE निगरानी, मूल्य-सीमा और अन्य ट्रेडिंग प्रक्रियाओं के लिए विशेष Standard Operating Procedures (SOPs) भी विकसित करेगा। हालांकि, इसके सामने एक महत्वपूर्ण नियामकीय उदाहरण है। 2017 में BSE ने भी इसी प्रकार की PTT व्यवस्था का प्रस्ताव दिया था, लेकिन SEBI ने हितों के टकराव संबंधी चिंताओं के कारण इसे अस्वीकार कर दिया था। इसलिए NSE का प्रस्ताव नियामकीय दृष्टि से महत्वपूर्ण परीक्षण होगा।

NSE पर शेयर कारोबार क्यों महत्वपूर्ण है?

- * NSE भारत के इक्विटी और डेरिवेटिव बाजार में अत्यधिक प्रभावशाली है। यह लगभग 93% नकद बाजार कारोबार, लगभग पूरे फ्यूचर्स प्रीमियम और लगभग 75% ऑप्शंस प्रीमियम में हिस्सेदारी रखता है।
- * यदि NSE के शेयरों को NSE पर कारोबार की अनुमति मिलती है, तो इससे शेयर की तरलता, दृश्यता और निवेशक भागीदारी बढ़ सकती है। साथ ही, NSE पर कारोबार होने से इसके शेयरों को Nifty 500 और Nifty Financial Services जैसे सूचकांकों में शामिल किए जाने की संभावना भी बढ़ सकती है। इससे इंडेक्स फंड और निष्क्रिय निवेश से अतिरिक्त मांग उत्पन्न हो सकती है।
- * PTT व्यवस्था पूरी तरह अभूतपूर्व भी नहीं है। लगभग 250 ऐसी कंपनियाँ, जो NSE पर सूचीबद्ध नहीं हैं, उसके प्लेटफॉर्म पर कारोबार की अनुमति प्राप्त कर चुकी हैं।

IPO का समय और मूल्यांकन

- * NSE का IPO ऐसे समय में आ रहा है जब भारत के प्राथमिक बाजार में फिर से तेजी दिखाई दे रही है। 2026 में मेनबोर्ड IPO से जुटाई गई कुल राशि का लगभग 73% जुलाई और अगस्त में आया। NSE की बाजार हिस्सेदारी, ब्रांड वैल्यू और वित्तीय बाजार में प्रणालीगत भूमिका इसे अन्य IPO से अलग बनाती है।
- * ब्रोकरेज अनुमानों के अनुसार NSE का संभावित P/E अनुपात 35-49 गुना FY26 आय के बीच हो सकता है। अंतिम मूल्यांकन IPO के प्राइस बैंड पर निर्भर करेगा।

व्यापक आर्थिक महत्व

- * NSE का IPO केवल एक बड़ा पूंजी-बाजार लेनदेन नहीं है। यह भारत की प्रमुख Market Infrastructure Institution के सार्वजनिक बाजार में परिवर्तन का संकेत है। इसका महत्व बढ़ती घरेलू बचत के वित्तीयकरण, खुदरा निवेश में वृद्धि, डिजिटल ट्रेडिंग और डेरिवेटिव बाजार के विस्तार से भी जुड़ा है।
- * हालांकि, नियामकीय बदलावों के कारण NSE के राजस्व और मुनाफे पर दबाव तथा सेल्फ-ट्रेडिंग से जुड़े हितों के टकराव महत्वपूर्ण जोखिम हैं।

निष्कर्ष

- * NSE IPO भारत के पूंजी बाजार के विकास में महत्वपूर्ण पड़ाव हो सकता है। लेकिन इसके साथ बाजार दक्षता, प्रतिस्पर्धा, पारदर्शिता और नियामकीय निष्पक्षता के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक होगा।

भारत का अनुसंधान विरोधाभासः मात्रा से वास्तविक दुनिया के प्रभाव तक

भारत हाल के वर्षों में अकादमिक ज्ञान के एक प्रमुख वैश्विक उत्पादक के रूप में उभरा है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में देश ने अभूतपूर्व वृद्धि दर्ज की है। हालांकि, यह वृद्धि एक गंभीर 'अनुसंधान विरोधाभास' को जन्म दे रही है, जहां प्रकाशनों और पेटेंट की भारी संख्या वास्तविक दुनिया के प्रभाव, व्यावसायीकरण और गुणवत्ता में परिवर्तित नहीं हो पा रही है।

भारत के अनुसंधान इकोसिस्टम की वर्तमान स्थिति और वृद्धि

वर्ष 2020 और 2025 के बीच भारतीय शोधकर्ताओं ने 'स्कोपस-इंडेक्स्ड' (Scopus-indexed) पत्रिकाओं में लगभग 1.6 मिलियन (16 लाख) रिसर्च पेपर प्रकाशित किए हैं। यह संख्या अमेरिका, ब्रिटेन और चीन को पीछे छोड़ते हुए विश्व में सर्वाधिक है।

- ❖ **पेटेंट फाइलिंग में उछाल:** विश्वविद्यालयों द्वारा पेटेंट फाइलिंग में लगभग चार गुना वृद्धि हुई है (2020-21 में 11,150 से बढ़कर 2024-25 में 45,776)। कुछ निजी विश्वविद्यालयों ने पेटेंट फाइल करने में आईआईटी (IITs) को भी पीछे छोड़ दिया है।
- ❖ **वैश्विक रैंकिंग में सुधार:** 'क्यूएस वर्ल्ड यूनिवर्सिटी रैंकिंग 2026' में भारत के 54 संस्थान शामिल हैं, जो 2015 में केवल 11 थे। आठ भारतीय संस्थानों ने 'साइटेशन पर फैकल्टी' (Citations per faculty) के लिए वैश्विक शीर्ष 100 में जगह बनाई है, जिसमें IIT दिल्ली (123वें स्थान पर) सबसे आगे है।

अनुसंधान विरोधाभासः मात्रा बनाम प्रभाव

इस अपार मात्रा के बावजूद, भारत एक 'पेपर फोर्ट्रेस' (कागजी किला) बनता जा रहा है। इसके प्रमुख बिंदु निम्नलिखित हैं:

1. **कम शोध प्रभाव :** भारत वार्षिक प्रकाशन मात्रा में विश्व में तीसरे स्थान पर है, लेकिन शोध के प्रभाव को मापने वाले 'एच-इंडेक्स' (h-index) में 19वें स्थान पर है। अमेरिका का कुल एच-इंडेक्स 3,213 है, जबकि भारत का मात्र 925 है। इसका अर्थ है कि भारत के शोध पत्र कम पढ़े जाते हैं और अन्य वैज्ञानिकों द्वारा कम उद्धृत (Cited) किए जाते हैं।
2. **पेटेंट विरोधाभास:** विश्वविद्यालयों द्वारा पेटेंट फाइलिंग तो तेजी से बढ़ी है, लेकिन पिछले पांच वर्षों में विश्वविद्यालयों के लिए पेटेंट 'ग्रांट रेट' (अनुदान दर) मात्र 3% रही है। इससे भी अधिक चिंताजनक बात यह है कि व्यावसायिक उपयोग में लाए गए पेटेंट का हिस्सा 2022-23 के 12.1% से गिरकर 2024-25 में केवल 1.6% रह गया है।

चुनौतियाँ और चिंताजनक कारक

इस विरोधाभास के पीछे कई संस्थागत और ढांचागत कारण जिम्मेदार हैं:

- ❖ **दोषपूर्ण प्रोत्साहन संरचना:** नेशनल इंस्टीट्यूशनल रैंकिंग फ्रेमवर्क (NIRF) 'अनुसंधान और व्यावसायिक अभ्यास' को 30% वेटेज देता है। यह केवल 'फाइल किए गए पेटेंट' या 'प्रकाशित पत्रों' को पुरस्कृत करता है, लेकिन गुणवत्ता या व्यावसायीकरण न होने पर कोई दंड नहीं देता।
- ❖ **नकद प्रोत्साहन:** कई निजी विश्वविद्यालय एक पेपर प्रकाशित करने या पेटेंट फाइल करने पर नकद इनाम देते हैं। इससे फर्जी पत्रिकाओं में प्रकाशन और 'पेपर-मिल' गतिविधियों को बढ़ावा मिला है। (इसके विपरीत, पुराने IIT नकद के बजाय बेहतर लैब और शोध बुनियादी ढांचे पर जोर देते हैं)।

किए गए प्रयास

- ❖ भारत सरकार ने अनुसंधान के माहौल को सुधारने के लिए अनुसंधान नेशनल रिसर्च फाउंडेशन (ANRF) की स्थापना की है, 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020' लागू की है और बौद्धिक संपदा अधिकार (IPR) सुधार किए हैं। हालांकि, ब्रिटेन या डेनमार्क की तरह भारत में अभी भी शोध कदाचार की जांच के लिए कोई 'पूर्ण रूप से स्वतंत्र राष्ट्रीय शोध सत्यनिष्ठा निकाय' नहीं है।

आगे की राह

भारत को 'अधिक प्रकाशन' के मॉडल से हटकर 'प्रभाव पैदा करने' के मॉडल पर जाना होगा:

- ❖ **NIRF मेट्रिक्स में सुधार:** रैंकिंग प्रणाली को केवल 'मात्रा' के बजाय 'गुणवत्ता-समायोजित उद्धरणों' (Quality-adjusted citations) और वास्तविक शोध प्रभाव को पुरस्कृत करना चाहिए। पेटेंट को फाइल करने के बजाय उनके सफल व्यावसायीकरण पर गिना जाना चाहिए।
- ❖ **राष्ट्रीय शोध सत्यनिष्ठा प्राधिकरण:** एक स्वायत्त निकाय की स्थापना की जानी चाहिए, जिसके पास साहित्यिक चोरी और फर्जी शोध की जांच करने की शक्ति हो। अनैतिक लेखकों के लिए सख्त दंड का प्रावधान होना चाहिए।
- ❖ **प्रोत्साहन का सही तरीका:** विश्वविद्यालयों को 'कैश-पर-पेपर' मॉडल को बंद करके उस पैसे का उपयोग आधुनिक प्रयोगशालाएं बनाने और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण में करना चाहिए।
- ❖ **उद्योग-अकादमिक सहयोग:** ऐसे शोध को बढ़ावा दिया जाना चाहिए जो समाज की स्थानीय समस्याओं को हल करे और जिसका उपयोग स्टार्टअप्स या उद्योगों द्वारा किया जा सके।

एथिकल स्कैन

जी. एस. पेपर IV



सरकारी कर्मचारियों के लिए सोशल मीडिया आचार संहिता: निजी अभिव्यक्ति बनाम सार्वजनिक जवाबदेही

केंद्र सरकार ने सरकारी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक 'सोशल मीडिया आचार संहिता' लागू करने पर विचार करना शुरू किया है। इसका उद्देश्य ड्यूटी के दौरान सोशल मीडिया के बढ़ते उपयोग, व्यक्तिगत रील्स और पोस्ट को नियंत्रित करना है। प्रस्तावित नियमों में संवेदनशील मामलों में सामग्री हटाने की समय सीमा को 24 घंटे से घटाकर दो घंटे करने की बात भी शामिल है। इसके अलावा, NCPCR ने बच्चों के यौन शोषण संबंधी सामग्री के विज्ञापनों पर मेटा ईंडिया के प्रमुख को समन जारी किया।

नीतिशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य

- ❖ **निजी अभिव्यक्ति की सीमा:** सरकारी कर्मचारियों को भी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अधिकार है, लेकिन सार्वजनिक सेवक होने के नाते उनके आचरण और अभिव्यक्ति पर कुछ प्रतिबंध आवश्यक हैं। यह सवाल उठता है कि सीमा कहाँ तक जाए?
- ❖ **नैतिक दुविधा:** एक ओर, सरकारी कर्मचारियों की निजी स्वतंत्रता की रक्षा करना आवश्यक है। दूसरी ओर, सार्वजनिक पद की गरिमा और तटस्थता बनाए रखने के लिए नियम जरूरी हैं। यह संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है।
- ❖ **डिजिटल युग की चुनौती:** सोशल मीडिया ने सार्वजनिक और निजी जीवन की सीमाओं को धुंधला कर दिया है। सरकारी कर्मचारियों के लिए यह तय करना मुश्किल है कि क्या साझा करना उचित है और क्या नहीं।

केस अध्ययन

आप एक जिले के नवनियुक्त जिलाधिकारी हैं। आपके अधीनस्थ एक युवा और तेज-तर्रार उप-जिलाधिकारी (SDM) हैं, जो सोशल मीडिया पर काफी लोकप्रिय हैं और उनके लाखों फॉलोअर्स हैं। वे अक्सर अपनी दिनचर्या, फिटनेस और काम के दौरान के वीडियो (रील्स) अपने व्यक्तिगत अकाउंट पर साझा करते हैं। हाल ही में, जिले में एक अत्यंत संवेदनशील अतिक्रमण हटाओ अभियान के दौरान, उन्होंने पृष्ठभूमि में बज रहे एक नाटकीय गीत के साथ अपनी एक शरील पोस्ट की, जिसमें वे पुलिस बल के साथ खड़े दिख रहे हैं।

- ❖ यह वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो गया। युवाओं का एक वर्ग उनके इस बेखौफ अंदाज की तारीफ कर रहा है, लेकिन नागरिक समाज और वरिष्ठ अधिकारी इसे पद की गरिमा के खिलाफ, बेदखल किए गए लोगों के प्रति असंवेदनशील और प्रस्तावित 'सोशल मीडिया आचार संहिता' का घोर उल्लंघन मान रहे हैं। कुछ लोगों का तर्क है कि ड्यूटी के दौरान ऐसी गतिविधियाँ एक लोक सेवक की तटस्थता और गंभीरता पर गंभीर सवाल उठाती हैं।
- ❖ जब आप उस SDM से स्पष्टीकरण मांगते हैं, तो वे तर्क देते हैं कि यह उनका व्यक्तिगत सोशल मीडिया अकाउंट है और संविधान उन्हें एक नागरिक के रूप में अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता (अनुच्छेद 19) देता है। साथ ही, उनका दावा है कि इन वीडियो के माध्यम से वे युवाओं को प्रशासन से जोड़ रहे हैं और सरकारी कामकाज में पारदर्शिता ला रहे हैं। (250 शब्द 20 अंक)

1. इस मामले में शामिल प्रमुख नैतिक मुद्दे क्या हैं?
2. एक सिविल सेवक की 'निजी अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' और 'सार्वजनिक जवाबदेही व पद की गरिमा' के बीच के नैतिक द्वंद्व का मूल्यांकन करें।
3. जिलाधिकारी के रूप में, इस स्थिति को संभालने के लिए आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी?

उत्तर: यह केस स्टडी डिजिटल युग में एक लोक सेवक की 'निजता एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता' और 'सिविल सेवा आचरण नियमों (तटस्थता, सहानुभूति और अनाम रहने का सिद्धांत)' के बीच के संघर्ष को रेखांकित करती है। जिलाधिकारी के रूप में मेरा लक्ष्य यह सुनिश्चित करना है कि प्रशासन पारदर्शी हो, लेकिन वह व्यक्तिगत पीआर (PR) या नायक-पूजन (Hero-worshipping) का साधन न बने।

इस मामले में शामिल प्रमुख नैतिक मुद्दे :

- ❖ **सहानुभूति और करुणा का अभाव:** अतिक्रमण हटाना एक संवेदनशील प्रशासनिक कार्य है, जिसमें लोग बेघर होते हैं। वहाँ नाटकीय संगीत के साथ रील बनाना गरीबों की पीड़ा के प्रति घोर असंवेदनशीलता है।

निबंध

निबन्ध लेखन वो माध्यम है, जिसके द्वारा अभ्यर्थी किसी विषय के विविध आयामों को तार्किक संतुलित एवं सुसंगत रूप से प्रस्तुत करता है। एक उत्कृष्ट निबंध मात्र तथ्यों का संकलन नहीं होता है, बल्कि वह लेखक के व्यक्तित्व दृष्टिकोण मूल्यबोध तथा समस्याओं के प्रतीक उसके समाधानपरक चिंतन का प्रतिबिंब होता है।



सहानुभूति के बिना तर्क एक कुंद तलवार के समान है

निबंध-1

मानव अस्तित्व मुख्य रूप से दो शक्तियों द्वारा संचालित होता है—मस्तिष्क (तर्क) और हृदय (सहानुभूति)। तर्क (Logic) वह तीक्ष्ण अस्त्र है जो भ्रम के जालों को काटता है, तथ्यों का विश्लेषण करता है और सत्य को असत्य से अलग करता है। यह एक तलवार के समान है। लेकिन, क्या मात्र एक नंगी तलवार से न्याय या कल्याण की स्थापना की जा सकती है?

जब एक सर्जन किसी मरीज का ऑपरेशन करता है, तो उसके हाथ में थामी गई शस्केलपेलस (सर्जिकल चाकू) तर्क और विज्ञान का प्रतीक होती है। लेकिन उस चाकू को चलाने के पीछे मरीज की जान बचाने की जो भावना होती है, वह 'सहानुभूति' है। यदि उस शल्य चिकित्सक के भीतर से सहानुभूति निकाल दी जाए, तो वही तीक्ष्ण चाकू एक कसाई के 'कुंद हथियार' में बदल जाएगा, जो केवल घाव देगा, उपचार नहीं। ठीक इसी प्रकार, जब नियमों, कानूनों और डेटा पर आधारित 'तर्क' से मानवीय संवेदना और 'सहानुभूति' को हटा दिया जाता है, तो वह एक कुंद तलवार बन जाता है। ऐसी कुंद तलवार समस्याओं का सटीक समाधान करने के बजाय, समाज को केवल छीलती है, लहलुहान करती है और निर्दोषों को पीड़ा पहुँचाती है।

भारतीय समाज और लोक-विमर्श में सहानुभूति के महत्व को रेखांकित करने वाला एक अत्यंत लोकप्रिय मुहावरा है— “जाके पैर न फटी बिवाई, वो क्या जाने पीर पराई।” (अर्थात्, जिसने स्वयं कभी पीड़ा नहीं झेली, वह दूसरे के दर्द को नहीं समझ सकता)। इस मुहावरे का सामाजिक और सांस्कृतिक महत्व यह है कि यह कोरे बौद्धिक ज्ञान (तर्क) को खारिज करता है और 'अनुभूति' को सर्वोच्च मानता है। आप किसी गरीब को तर्क से यह नहीं समझा सकते कि भूख क्या होती है; भूख को समझने के लिए सहानुभूति का होना अनिवार्य है।

इस मुहावरे के भाव को सदियों पुरानी एक प्रसिद्ध लोककथा (जो राजा सुलैमान / किंग सोलोमन के न्याय के रूप में विश्वविख्यात है) के माध्यम से समझा जा सकता है। एक बार राजा के दरबार में दो महिलाएँ एक जीवित शिशु को लेकर आईं। दोनों दावा कर रही थीं कि वह बच्चा उनका है। राजा के सामने कोई गवाह नहीं था। यदि राजा केवल 'विशुद्ध तर्क' और गणित का सहारा लेता, तो समाधान बहुत सरल था—बच्चे को बीच से काटकर आधा-आधा दोनों महिलाओं में बाँट दिया जाए। यह 'तर्क' था। लेकिन यह तर्क एक 'कुंद तलवार' था जो उस मासूम बच्चे की जान ले लेता। जैसे ही राजा ने बच्चे को काटने का आदेश दिया, बच्चे की असली माँ रो पड़ी और बोली, “महाराज! बच्चे को काटें नहीं, इसे पूरी तरह दूसरी महिला को दे दें, कम से कम यह जीवित तो रहेगा।” दूसरी महिला (जो झूठी थी) बच्चे को कटवाने पर राजी थी। राजा की 'सहानुभूति' ने असली माँ के दर्द को पहचान लिया और न्याय हो गया। यह कथा अकाट्य प्रमाण है कि सहानुभूति के बिना, न्याय और तर्क का अस्त्र केवल विनाश करता है।

प्रशासनिक तंत्र का निर्माण तर्कों, नियमों और कानूनों के आधार पर किया जाता है। प्रसिद्ध समाजशास्त्री मैक्स वेबर ने नौकरशाही को एक तार्किक श्लौह पिंजर कहा था।

कल्पना कीजिए कि एक 80 वर्षीय वृद्ध महिला कड़कड़ती ठंड में राशन की दुकान पर जाती है। 'तर्क' (मशीन) कहता है कि उसके उंगलियों के निशान घिस चुके हैं, इसलिए आधार कार्ड मैच नहीं कर रहा है। प्रशासनिक तर्क के अनुसार उसे राशन नहीं मिलना चाहिए। यदि वहाँ बैठा अधिकारी केवल तर्क का इस्तेमाल करेगा, तो वह महिला भूख से मर सकती है (जैसा कि भारत के कुछ ग्रामीण अंचलों में हुआ भी है)। लेकिन यदि उस अधिकारी में 'सहानुभूति' है, तो वह समझेगा कि मशीन गलत हो सकती है, इंसान की भूख नहीं। सहानुभूति उस प्रशासनिक तर्क को एक मानवीय समाधान में बदल देती है। सहानुभूति विहीन प्रशासन जनता के लिए एक कुंद तलवार है, जो रक्षा करने के बजाय प्रहार करती है।

मुख्य परीक्षा मॉडल हल प्रश्न पत्र



सामान्य अध्ययन- III (प्रौद्योगिकी)

प्रश्न : उन्नत अंतरिक्ष प्रौद्योगिकियों का उपयोग पृथ्वी के पर्यावरण संरक्षण और अंतरिक्ष मौसम की भविष्यवाणी में किस प्रकार किया जा रहा है? आदित्य-L1 मिशन द्वारा सौर ज्वालाओं के पूर्व-संकेतों की पहचान के सामरिक महत्व को स्पष्ट कीजिए।
(250 शब्द)

उत्तर: उन्नत अंतरिक्ष और संबंधित प्रौद्योगिकियां पृथ्वी के पर्यावरण संरक्षण, आपदा प्रबंधन और अंतरिक्ष मौसम की सटीक भविष्यवाणी में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं।

➤ **पर्यावरण संरक्षण और मौसम पूर्वानुमान में प्रौद्योगिकी का उपयोग:**

- भारत सरकार के 'मिशन मौसम' के तहत डॉपलर वेदर रडार (DWR) नेटवर्क का विस्तार किया जा रहा है, जो माइक्रोवेव तरंगों की आवृत्ति में बदलाव (डॉपलर प्रभाव) का विश्लेषण करके बादलों की दूरी, हवा और बादलों की गति तथा दिशा को मापता है।
- DWR की मदद से बादल फटने, अचानक आने वाली बाढ़ और चक्रवातों के निर्माण की अत्यंत सटीकता से पूर्व-चेतावनी दी जा सकती है, जिससे आपदा प्रबंधन में मदद मिलती है और जान-माल का नुकसान कम होता है।
- समुद्री अनुसंधान के क्षेत्र में 'सागर मंथन' जैसे विशिष्ट जहाज का उपयोग जलवायु परिवर्तन के समुद्री प्रभावों का डेटा एकत्र करने और समुद्री जैव विविधता के अध्ययन के लिए किया जा रहा है।

आदित्य-L1 मिशन द्वारा सौर ज्वालाओं के पूर्व-संकेतों की पहचान का सामरिक महत्व: भारत के पहले अंतरिक्ष-आधारित सौर मिशन, आदित्य-L1 ने प्रमुख सौर ज्वालाओं (Solar Flares) के फटने से कई घंटे पहले ही सूर्य के वायुमंडल में छोटी और अल्पकालिक चमक (पूर्व-चेतावनी संकेतों) का पता लगाया है। इसके प्रमुख सामरिक महत्व निम्नलिखित हैं:

- **सटीक अंतरिक्ष मौसम भविष्यवाणी:** इन पूर्व-संकेतों की पहचान से अंतरिक्ष मौसम की सटीक भविष्यवाणी करने में काफी मदद मिलेगी।
- **भू-चुंबकीय तूफानों की चेतावनी:** सौर ज्वालाओं से भारी मात्रा में उत्पन्न विकिरण पृथ्वी पर भू-चुंबकीय तूफानों का कारण बन सकता है।

डॉपलर वेदर रडार, 'सागर मंथन' और 'आदित्य-L1' जैसे मिशन यह प्रमाणित करते हैं कि विज्ञान और अंतरिक्ष प्रौद्योगिकी अब सक्रिय दृष्टिकोण अपना रही है। इन उन्नत प्रौद्योगिकियों के माध्यम से न केवल पृथ्वी के बदलते पर्यावरण को संरक्षित और प्रबंधित किया जा रहा है, बल्कि अंतरिक्ष मौसम से जुड़े भविष्य के खतरों का पूर्वानुमान लगाकर हमारी वैश्विक संचार और सामरिक अवसंरचना की सुरक्षा भी सुनिश्चित की जा रही है।

सामान्य अध्ययन- III (आर्थिक विकास)

प्रश्न: IMF, World Bank और WTO में सुधार Global South के लिए अधिक न्यायसंगत वैश्विक आर्थिक शासन सुनिश्चित करने में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं? भारत की भूमिका के संदर्भ में चर्चा कीजिए।
(250 शब्द)

उत्तर: वर्तमान वैश्विक आर्थिक व्यवस्था में शक्ति-संतुलन और संस्थागत प्रतिनिधित्व के बीच असमानता दिखाई देती है। बढ़ते व्यापार संरक्षणवाद, ऋण संकट, विकास वित्त की कमी और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं की अस्थिरता के कारण IMF, World Bank और WTO में सुधार आवश्यक हो गया है।

IMF में सुधार:

IMF में कोटा और मतदान अधिकारों को वर्तमान वैश्विक आर्थिक वास्तविकताओं के अनुरूप पुनर्संतुलित किया जाना चाहिए। विकासशील देशों की बढ़ती आर्थिक भूमिका के अनुरूप उनका प्रतिनिधित्व बढ़ाने से IMF की वैधता, उत्तरदायित्व और संकट-प्रबंधन क्षमता मजबूत होगी। भारत Global South के लिए अधिक न्यायसंगत quota realignment का समर्थन करता है।

World Bank में सुधार:

जलवायु परिवर्तन, गरीबी, स्वास्थ्य, शिक्षा और बुनियादी ढाँचे के लिए विकासशील देशों की वित्तीय आवश्यकताएँ बढ़ रही हैं। इसलिए World Bank की शासन संरचना, शेयरहोल्डिंग और प्रतिनिधित्व में सुधार के साथ विकास वित्त को अधिक सुलभ, किफायती और विकासशील देशों की प्राथमिकताओं के अनुरूप बनाया जाना चाहिए।

विचार बिंदु

सिविल सर्विसेज क्रॉनिकल पत्रिका का यह खंड सामान्य अध्ययन पेपर I, II, III एवं IV से जुड़े प्रमुख समसामयिक एवं प्रासंगिक विषयों को एक साथ प्रस्तुत करता है और यूपीएससी सिविल सेवा (मुख्य) परीक्षा के लिए उनके व्यापक महत्व को स्पष्ट रूप से रेखांकित करता है।



प्रश्न: “अनुच्छेद 17 केवल प्रवेश से वंचित करने के विरुद्ध नहीं, बल्कि जाति-आधारित शुद्धता-अशुद्धता की मानसिकता और उससे जुड़े भेदभाव के विरुद्ध भी संवैधानिक सुरक्षा प्रदान करता है।” सामान्य अध्ययन, पेपर- II (भारतीय राजव्यवस्था)

हल्लानी 'शुद्धिकरण' विवाद और अनुच्छेद 17

हल्लानी के रामलीला मैदान में एक वरिष्ठ राजनीतिक नेता की रैली के दो दिन बाद किए गए 'शुद्धिकरण' अनुष्ठान ने यह संवैधानिक प्रश्न उठाया है कि क्या किसी दलित व्यक्ति की उपस्थिति या स्पर्श के बाद किसी सार्वजनिक स्थान का शुद्धिकरण 'अस्पृश्यता' की श्रेणी में आ सकता है। यह विवाद केवल धार्मिक अनुष्ठान तक सीमित नहीं है, बल्कि समानता, गरिमा और जाति-आधारित भेदभाव से भी जुड़ा है।

अनुच्छेद 17 और कानूनी व्यवस्था

- भारतीय संविधान का अनुच्छेद 17 अस्पृश्यता को समाप्त करता है और इसके किसी भी रूप में व्यवहार को निषिद्ध करता है।
- संविधान में 'अस्पृश्यता' की स्पष्ट परिभाषा नहीं दी गई है। सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि अनुच्छेद 17 का प्रभाव केवल राज्य तक सीमित नहीं है, बल्कि गैर-राज्य पक्षकारों पर भी लागू होता है।
- अनुच्छेद 17 को प्रभावी बनाने के लिए संसद ने अस्पृश्यता (अपराध) अधिनियम, 1955 बनाया, जिसे 1976 में संशोधित कर नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 1955 (Protection of Civil Rights Act) नाम दिया गया।
- यह कानून अस्पृश्यता के प्रचार, उसके व्यवहार तथा उससे उत्पन्न सामाजिक अक्षमताओं को दंडनीय बनाता है।

'सुकन्या शांति' मामला, 2024

- Sukanya Shantha v. Union of India (2024) में सर्वोच्च न्यायालय ने जेल नियमावलियों में मौजूद जाति-आधारित भेदभावपूर्ण प्रावधानों को निरस्त किया।
- न्यायालय ने अस्पृश्यता को जाति व्यवस्था में निहित 'शुद्धता और अशुद्धता' की अवधारणाओं से जोड़ा।
- न्यायालय ने महत्वपूर्ण सिद्धांत स्थापित किया कि किसी व्यक्ति के अस्तित्व, स्पर्श या उपस्थिति से कोई कलंक नहीं जोड़ा जा सकता।
- इससे अनुच्छेद 17 की व्याख्या केवल शारीरिक बहिष्कार तक सीमित न रहकर व्यक्ति के स्पर्श या उपस्थिति के आधार पर होने वाले भेदभाव तक विस्तृत होती है।

राजस्थान हाईकोर्ट का दृष्टांत

- Surya Narayan Choudhary v. State of Rajasthan (1988) में नाथद्वारा के श्रीनाथजी मंदिर में दलित श्रद्धालुओं के साथ भेदभाव का मामला सामने आया था। दलितों को प्रवेश से पहले शुद्धिकरण प्रक्रिया से गुजरना पड़ता था।
- राजस्थान हाईकोर्ट ने इसे अन्य श्रद्धालुओं पर लागू न होने वाली अतिरिक्त भेदभावपूर्ण शर्त माना और इसे अनुच्छेद 14, 15 और 17 के विरुद्ध बताया।
- हालाँकि हल्लानी मामले में शुद्धिकरण स्थान के उपयोग के बाद किया गया और उसका कारण विवादित है। इसलिए नाथद्वारा का निर्णय सीधे लागू नहीं होता, लेकिन यह जाति-आधारित शुद्धिकरण की संवैधानिक समस्या को स्पष्ट करता है।

SC/ST अत्याचार निवारण अधिनियम से अंतर

- अनुच्छेद 17 और नागरिक अधिकार संरक्षण अधिनियम को SC/ST (अत्याचार निवारण) अधिनियम, 1989 से अलग समझना आवश्यक है।
- इसकी धारा 3(1)(r) सार्वजनिक दृष्टि में किसी SC/ST व्यक्ति को जातिगत पहचान के आधार पर जानबूझकर अपमानित या डराने को दंडित करती है।
- Hitesh Verma v. State of Uttarakhand (2020) में सर्वोच्च न्यायालय ने कहा कि प्रत्येक अपमान स्वतः इस प्रावधान के अंतर्गत अपराध नहीं बनता; उसका संबंध व्यक्ति की जातिगत पहचान से होना आवश्यक है।

हल्लानी मामले में निर्णायक प्रश्न

- केवल 'शुद्धिकरण' शब्द या रैली के दो दिन बाद किए गए अनुष्ठान से अस्पृश्यता सिद्ध नहीं होती। निर्णायक प्रश्न यह होगा कि क्या दलित व्यक्ति के स्पर्श या उपस्थिति को जाति-आधारित 'अशुद्धता' से जोड़ा गया था।
- यदि ऐसा जातिगत संबंध प्रमाणित होता है, तो Sukanya Shantha vs. Surya Narayan Choudhary जैसे निर्णय प्रासंगिक होंगे।
- यदि अनुष्ठान का कारण जाति से असंबंधित था, तो केवल समय-सामय के आधार पर इसे अस्पृश्यता नहीं माना जा सकता।

निष्कर्ष: अनुच्छेद 17 केवल प्रवेश से वंचित करने के विरुद्ध नहीं, बल्कि जाति-आधारित शुद्धता-अशुद्धता की मानसिकता और उससे जुड़े भेदभाव के विरुद्ध भी संवैधानिक सुरक्षा प्रदान करता है।



सिविल सेवा मुख्य परीक्षा हेतु समसामयिक विषयों पर आधारित प्रश्न

प्रश्न 1. “निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता केवल वास्तविक ही नहीं, बल्कि सार्वजनिक धारणा में भी दिखाई देनी चाहिए।” भारत में निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति की वर्तमान व्यवस्था के संदर्भ में आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

(150 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 2. रूस पर प्रस्तावित अमेरिकी प्रतिबंध और रूसी तेल पर भारत की निर्भरता के संदर्भ में भारत की ऊर्जा सुरक्षा तथा रणनीतिक स्वायत्तता के समक्ष उत्पन्न चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए।

(150 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 3. SCO भारत को आतंकवाद-रोधी सहयोग, कनेक्टिविटी, ऊर्जा और मध्य एशिया के साथ रणनीतिक संवाद के लिए महत्वपूर्ण मंच प्रदान करता है। इसके अवसरों एवं सीमाओं का आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

(150 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 4. “राजस्थान के शेखावाटी क्षेत्र की हवेली स्थापत्य कला और भित्ति चित्रकारी (Fresco Paintings) की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए। यह शैली भारतीय सांस्कृतिक धरोहर में किस प्रकार एक अनूठा स्थान रखती है?”

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-I

प्रश्न 5 “राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 के उद्देश्यों को धरातल पर उतारने में ‘पीएम श्री’ (PM SHRI) योजना की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। यह योजना किस प्रकार पारंपरिक स्कूली शिक्षा प्रणाली को भविष्य-उन्मुख (Future-ready) मॉडल में बदलने का प्रयास करती है?”

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 6. भारत इलेक्ट्रिक मोबिलिटी इंडेक्स (IEMI) को सहयोगी एवं प्रतिस्पर्धी संघवाद का उपकरण मानते हुए, राज्यों के बीच स्वच्छ ऊर्जा संक्रमण में प्रतिस्पर्धा को बढ़ावा देने के लाभ एवं सीमाओं का मूल्यांकन कीजिए।

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-III

प्रश्न 7. अंतिम छोर तक डिलीवरी वित्तीय संसाधनों जितना ही संस्थागत क्षमता का प्रश्न है। ग्रामीण भारत में कल्याण हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता में सुधार के लिए सामुदायिक-आधारित कार्यकर्ता कैसे मदद कर सकते हैं, परीक्षा कीजिए।

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 8. “हिमालयी क्षेत्रों में ‘हेरिटेज विलेज’ और सतत पर्यटन जैसी विकास पहलों को बढ़ावा देते समय आपदा जोखिम न्यूनीकरण (DRR) को शामिल करना क्यों आवश्यक है? लद्दाख जैसे संवेदनशील क्षेत्रों के संदर्भ में उदाहरण सहित स्पष्ट कीजिए।”

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-III

प्रश्न 9. “सिंथेटिक ड्रग्स और नशीले पदार्थों की अवैध तस्करी केवल कानून-व्यवस्था की समस्या नहीं है, बल्कि यह सामाजिक-आर्थिक ढाँचे और मानव सुरक्षा के लिए एक आपदा के समान है। ‘नशा मुक्त भारत अभियान (2026-29)’ के बहु-क्षेत्रीय (Whole-of-Government) दृष्टिकोण की समीक्षा कीजिए।”

(150 शब्द, 10 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-III

प्रश्न 10. पारंपरिक ज्ञान और आनुवंशिक संसाधन तेजी से बौद्धिक संपदा (Intellectual Property) और लाभ-साझाकरण (Benefit-sharing) की चिंताओं के विषय बनते जा रहे हैं। पारंपरिक चिकित्सा ज्ञान की सुरक्षा और बायोपायरेसी (जैविक चोरी) को रोकने में बिमस्टेक (BIMSTEC) देशों के बीच क्षेत्रीय सहयोग के महत्व की चर्चा कीजिए।

(250 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 11. प्रभावी नगरीय ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए प्रौद्योगिकी-केंद्रित दृष्टिकोण के बजाय साक्ष्य-आधारित (Evidence-based) और जीवन-चक्र-उन्मुख (Life-cycle-oriented) निर्णय-प्रक्रिया की ओर बदलाव आवश्यक है। भारत में टिकाऊ और जलवायु-अनुकूल शहरी शासन (Climate-responsive Urban Governance) को बढ़ावा देने में जीवन चक्र मूल्यांकन (Life Cycle Assessment - LCA) के महत्व की चर्चा कीजिए।

(250 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-III

प्रश्न 12. लद्दाख में सवैधानिक सुरक्षा उपायों की मांग केंद्र शासित प्रदेशों में लोकतांत्रिक प्रतिनिधित्व, पर्यावरण संरक्षण, सांस्कृतिक पहचान और प्रशासनिक दक्षता के बीच संतुलन बनाने की चुनौतियों को दर्शाती है। परीक्षण कीजिए।

(250 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 13. BRICS और SCO जैसे बहुपक्षीय मंच भारत को रणनीतिक स्वायत्तता बनाए रखते हुए वैश्विक शासन में अधिक प्रभावी भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करते हैं। आलोचनात्मक परीक्षण कीजिए।

(250 शब्द) सामान्य अध्ययन , पेपर-II

प्रश्न 14. “हाल ही में लद्दाख जैसे ठंडे मरुस्थलीय (Cold Desert) क्षेत्र में उच्च ऊँचाई वाले व्यावसायिक पुष्प-कृषि (High&Altitude Floriculture) मॉडल की शुरुआत की गई है। उच्च पर्वतीय क्षेत्रों में कृषि विविधता के लाभों का विश्लेषण कीजिए। क्या ऐसी परियोजनाएं संवेदनशील हिमालयी पारिस्थितिकी तंत्र के लिए पर्यावरणीय चुनौतियां उत्पन्न कर सकती हैं? चर्चा कीजिए।”

(250 शब्द, 15 अंक) सामान्य अध्ययन , पेपर-III



केंद्र द्वारा स्टेम सेल थेरेपी के नियमन पर निर्देश जारी

स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय (MoHFW) ने उन राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को निर्देश जारी की, जिन्होंने क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट (रजिस्ट्रेशन एंड रेगुलेशन) एक्ट, 2010 को अपनाया है।

प्रमुख निर्देश

- ❖ **स्वीकृत नैदानिक उपयोग:** स्टेम सेल थेरेपी को नियमित नैदानिक उपचार के रूप में केवल 32 MoHFW-अनुमोदित स्थितियों के लिए ही प्रदान किया जा सकता है, जो मुख्यतः रक्त संबंधी और ऑन्कोलॉजिकल विकारों से जुड़ी हैं।
- ❖ **अप्रमाणित उपचार:** ऑटिज्म स्पेक्ट्रम डिसऑर्डर (ASD) और अन्य अप्रमाणित स्थितियों के लिए स्टेम सेल हस्तक्षेप को मानक उपचार के रूप में नहीं दिया जा सकता। इन्हें केवल अनुमोदित नैदानिक परीक्षणों तक ही सीमित रखा गया है।
- ❖ **व्यावसायिक कदाचार:** अप्रमाणित स्टेम सेल थेरेपी का अनधिकृत प्रशासन, नुस्खा, प्रचार या विज्ञापन भारतीय चिकित्सा परिषद विनियम, 2002 के तहत व्यावसायिक कदाचार माना जाएगा।
- ❖ **संस्थागत जवाबदेही:** नियमों का पालन न करने वाले क्लीनिकल प्रतिष्ठानों का पंजीकरण रद्द किया जा सकता है और क्लीनिकल एस्टेब्लिशमेंट एक्ट, 2010 के तहत वित्तीय दंड लगाया जा सकता है।

भारत में स्टेम सेल थेरेपी का नियमन

- ❖ **औषधि और प्रसाधन सामग्री अधिनियम, 1940:** चिकित्सकीय रूप से उपयोग किए जाने वाले स्टेम सेल को दवाओं के रूप में विनियमित किया जाता है।
- ❖ **नई दवाएँ और नैदानिक परीक्षण (NDCT) नियम, 2019:** पर्याप्त रूप से परिवर्तित स्टेम सेल उत्पादों को नई दवाओं के रूप में विनियमित किया जाता है।
- ❖ **स्टेम सेल अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय दिशानिर्देश, 2017:** स्टेम सेल अनुसंधान के लिए नैतिक और वैज्ञानिक निगरानी प्रदान करते हैं।

भारत में वैश्विक शुष्क भूमि कांग्रेस 2026

वैश्विक शुष्क भूमि कांग्रेस 2026 का तीन दिवसीय आयोजन 10 -13 सितंबर 2026 तक नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय कृषि विज्ञान परिसर में आयोजित किया गया। इसे भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आईसीएआर) और अर्ध-शुष्क उष्णकटिबंधीय क्षेत्रों के लिए

अंतरराष्ट्रीय फसल अनुसंधान संस्थान (आईसीआरआईएसएटी) द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित किया गया।

- ❖ **शुष्क भूमि कृषि:** शुष्क भूमि कृषि उन क्षेत्रों में की जाने वाली खेती है जहाँ वर्षा सीमित और अनियमित होती है। ऐसे क्षेत्रों में फसल उत्पादन नमी संरक्षण, सूखा-सहिष्णु किस्मों और कुशल जल उपयोग पर निर्भर करता है।
- ❖ **आईसीएआर-आईसीआरआईएसएटी साझेदारी:** यह कांग्रेस आईसीएआर-आईसीआरआईएसएटी साझेदारी के 50 वर्ष पूरे होने का प्रतीक है। आईसीएआर भारत का शीर्ष कृषि अनुसंधान निकाय है, जबकि आईसीआरआईएसएटी हैदराबाद स्थित अंतरराष्ट्रीय संस्थान है।
- ❖ **मुख्य विषय:** कांग्रेस का विषय था—“दक्षिण-दक्षिण सहयोग के साथ शुष्क भूमि कृषि का रूपांतरण”। इसमें प्रजनन, जलवायु लचीलापन, पोषण एवं बाजार, कृषि प्रणाली, बीज प्रणाली तथा युवा एवं लैंगिक समावेशन जैसे छह प्रमुख विषय शामिल हैं।
- ❖ **भागीदार देश:** इसमें एशिया, अफ्रीका, अमेरिका के वैज्ञानिक, नीति-निर्माता और किसान प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

यूआईडीएआई ने आधार फेस ऑथेंटिकेशन एसडीके लॉन्च किया

भारतीय विशिष्ट पहचान प्राधिकरण (यूआईडीएआई) ने 9 सितंबर 2026 को मुंबई में ग्लोबल फिनटेक फेस्ट 2026 के दौरान आधार फेस ऑथेंटिकेशन सॉफ्टवेयर डेवलपमेंट किट (एसडीके) और सैंडबॉक्स लॉन्च किया। यह एसडीके एंड्रॉइड और आईओएस ऐप्स में आधार आधारित ई-केवाईसी और ऑनबोर्डिंग के लिए एकीकृत किया जा सकता है।

मुख्य विशेषताएँ

- ❖ यह एसडीके मोबाइल ऐप के अंदर ही चेहरे से प्रमाणीकरण संभव बनाता है।
- ❖ इसमें एआई और मशीन लर्निंग आधारित लाइवनेस डिटेक्शन, एंटी-स्पूफिंग जाँच तथा एन्क्रिप्शन प्रोटोकॉल शामिल हैं।
- ❖ सैंडबॉक्स बैंकों और फिनटेक कंपनियों के लिए सुरक्षित परीक्षण वातावरण प्रदान करता है, जहाँ बाहरी बायोमेट्रिक हार्डवेयर के बिना यूजर फ्लो का परीक्षण किया जा सकता है।

डिजिटल ऑनबोर्डिंग

यूआईडीएआई ने “ईज ऑफ ऑनबोर्डिंग प्लेबुक” भी जारी की। पार्टनर संस्थान अब अपने सर्वर पर स्थानीय स्तर पर फेस ऑथेंटिकेशन प्रोसेस कर सकते हैं, जिससे बाहरी सिस्टम पर निर्भरता कम होती है।

नीति आयोग की पहल: भारत में शून्य - उत्सर्जन माल ढुलाई के लिए पीएसटी की शुरुआत

नीति आयोग ने नई दिल्ली में आयोजित 5वें ई-फास्ट इंडिया समिट में क्लीन ट्रांसपोर्ट एग्रीगेटिंग प्लेटफॉर्म (PACT) और जीरो एमिशन ट्रक (ZET) मार्केटप्लेस लॉन्च किया।

यह पहल शून्य-उत्सर्जन माल ढुलाई, इलेक्ट्रिक ट्रक अपनाने, चार्जिंग अवसंरचना योजना और निर्माताओं, लॉजिस्टिक्स सेवा प्रदाताओं, चार्जिंग ऑपरेटरों तथा वित्तपोषकों के बीच व्यावसायिक जुड़ाव से जुड़ी है।

आर्थिक विकास एवं परिदृश्य

रूस से तेल आयात पर अमेरिकी दबाव

अमेरिकी प्रतिनिधि सभा ने Lindsey O. Graham Sanctioning Russia and Iran Act, 2026 पारित किया है। इसके तहत रूस से तेल और गैस खरीदने वाले देशों पर 100% तक टैरिफ लगाने का अधिकार अमेरिकी राष्ट्रपति को मिल सकता है।

भारत के लिए चिंता

भारत अपनी कच्चे तेल की जरूरत का 88% से अधिक आयात करता है। अगस्त 2026 में रूस से लगभग 20.8 लाख बैरल प्रतिदिन, यानी कुल तेल आयात का करीब 45% आया। 2022 के बाद रियायती रूसी तेल भारत की ऊर्जा सुरक्षा और रिफाइनिंग अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण आधार बना है।

संभावित प्रभाव

रूसी तेल में कमी से भारत को महंगे वैकल्पिक स्रोतों पर निर्भर होना पड़ सकता है, जिससे आयात बिल, मुद्रास्फीति और रिफाइनिंग लागत बढ़ सकती है। साथ ही, यह भारत-अमेरिका व्यापार वार्ता को भी प्रभावित कर सकता है।

आगे की राह

भारत को आयात स्रोतों में विविधता, रणनीतिक पेट्रोलियम भंडार, ऊर्जा दक्षता, घरेलू उत्पादन तथा अमेरिका के साथ कूटनीतिक संवाद बढ़ाने की आवश्यकता है। यह संकट भारत की रणनीतिक स्वायत्तता और ऊर्जा सुरक्षा के संतुलन की परीक्षा है।

IBC में धोखाधड़ी पर ED की नजर

प्रवर्तन निदेशालय (ED) ने दिवाला एवं शोधन अक्षमता संहिता (IBC), 2016 के तहत होने वाली धोखाधड़ी और अनियमितताओं को अपनी प्रमुख प्राथमिकताओं में शामिल किया है। चिंता है कि प्रमोटर या संबंधित पक्ष कम मूल्यांकन के जरिए संकटग्रस्त संपत्तियों पर पुनः नियंत्रण हासिल कर सकते हैं।

प्रमुख जोखिम

- ❖ ED ने धारा 291 को दरकिनार कर अयोग्य प्रमोटरों की भागीदारी, संबंधित पक्षों के बड़े हुए दावे, Committee of Creditors (CoC) में हेरफेर, संपत्ति की बिक्री तथा कृत्रिम रूप से बड़े ध्वंसन को प्रमुख जोखिम बताया है।

रिकवरी की चुनौती

- ❖ FY2021-22 से FY2025-26 के बीच 1,077 मामलों में लगभग ₹2.47 लाख करोड़ की वसूली हुई, जो स्वीकृत दावों का औसतन केवल 29% है। FY2025-26 में रिकवरी घटकर 20% रह गई।

IBC-PMLA तनाव

IBC की धारा 14 और 32A तथा PMLA के तहत संपत्ति कुर्की संबंधी प्रावधानों के बीच कानूनी तनाव उत्पन्न हो सकता है।

आगे की राह

पारदर्शी मूल्यांकन, CoC की निगरानी, संबंधित लेन-देन की जाँच और ED सहित अन्य एजेंसियों के बेहतर समन्वय से IBC की विश्वसनीयता तथा लेनदारों की वसूली सुनिश्चित की जानी चाहिए।

तांबे की कीमतों में रिकॉर्ड बढ़ोत्तरी

अंतरराष्ट्रीय बाजार में तांबे की कीमत रिकॉर्ड 14,708 डॉलर प्रति टन तक पहुँच गई है। यह तेजी वैश्विक आर्थिक मजबूती के बजाय मुख्यतः अमेरिकी टैरिफ की आशंका से प्रेरित है।

अमेरिकी टैरिफ का प्रभाव

अमेरिका ने अगस्त 2025 में अर्ध-निर्मित तांबे पर 50% शुल्क लगाया था। अब परिष्कृत तांबे पर जनवरी 2027 से 15% और 2028 में 30% शुल्क लगाए जाने की संभावना है। इसके चलते व्यापारी पहले से अमेरिकी बाजार में तांबा जमा कर रहे हैं।

स्टॉक और आपूर्ति

COMEX में लगभग 7 लाख टन तांबा जमा है, जबकि LME में करीब 2.65 लाख टन और SHFE में 63 हजार टन है। इससे अन्य बाजारों में उपलब्धता घटने और कीमतें बढ़ने लगी हैं। सीमित खनन आपूर्ति भी तेजी को समर्थन दे रही है।

बढ़ती मांग

तांबा विद्युत ग्रिड, नवीकरणीय ऊर्जा, AI डेटा सेंटर और इलेक्ट्रिक वाहनों के लिए महत्वपूर्ण है।

भारत पर प्रभाव

ऊँची कीमतें भारत में बिजली, बुनियादी ढाँचे और स्वच्छ ऊर्जा परियोजनाओं की लागत बढ़ा सकती हैं। यह तेजी दर्शाती है कि व्यापार नीतियाँ वैश्विक कमोडिटी कीमतों को मांग से स्वतंत्र रूप से भी प्रभावित कर सकती हैं।

भारत-EU FTA:

स्टील के लिए टैरिफ-रेट कोटा

भारत ने प्रस्तावित भारत-EU मुक्त व्यापार समझौते (FTA) के तहत यूरोपीय बाजार में स्टील निर्यात के लिए लगभग 16.41 लाख टन वार्षिक देश-विशिष्ट टैरिफ-रेट कोटा (TRQ) हासिल किया है।

TRQ क्या है?

टैरिफ-रेट कोटा के तहत निर्धारित मात्रा तक आयात पर कम या रियायती शुल्क लगता है, जबकि कोटा से अधिक आयात पर ऊँचा शुल्क लगाया जाता है। EU के नए नियमों में कोटा से बाहर भारतीय स्टील पर 50% शुल्क लगेगा।

भारत का कोटा

कुल कोटा 16,41,470 टन है, जिसमें लगभग 9.47 लाख टन डब्ल्यू तथा 6.95 लाख टन थ्रू के अंतर्गत है। इसमें हॉट-रोलड, कोल्ड-रोलड, कोटेड शीट, स्टेनलेस स्टील, वायर रॉड, पाइप आदि शामिल हैं।

राजव्यवस्था एवं शासन



निर्वाचन आयुक्तों की नियुक्ति पर मामला बड़ी पीठ के समक्ष

सर्वोच्च न्यायालय की दो-सदस्यीय पीठ ने 2023 के मुख्य निर्वाचन आयुक्त (CEC) एवं निर्वाचन आयुक्तों (ECs) की नियुक्ति कानून को चुनौती देने वाली याचिकाओं को भारत के मुख्य न्यायाधीश (CJI) के समक्ष भेज दिया। न्यायमूर्ति दीपांकर दत्ता और न्यायमूर्ति सतीश चंद्र शर्मा के विचार मामले के गुण-दोष पर अलग थे, लेकिन दोनों ने बड़ी पीठ की आवश्यकता पर सहमति जताई।

विवाद की पृष्ठभूमि

मार्च 2023 के अनूप बरनवाल बनाम भारत संघ फैसले में सर्वोच्च न्यायालय ने अंतरिम व्यवस्था के तहत नियुक्ति समिति में प्रधानमंत्री, लोकसभा में विपक्ष के नेता और CJI को शामिल किया था। बाद में संसद ने 2023 का कानून बनाकर ब्रह्म के स्थान पर प्रधानमंत्री द्वारा नामित केंद्रीय मंत्री को शामिल कर दिया।

मुख्य चिंता

इससे तीन सदस्यीय समिति में सरकार के दो प्रतिनिधि हो गए। न्यायमूर्ति दत्ता ने कहा कि निर्वाचन आयोग की स्वतंत्रता केवल वास्तविक नहीं, बल्कि दिखाई भी देनी चाहिए। उनके अनुसार, सरकार-नामित मंत्री के कारण विपक्ष के नेता की भूमिका प्रभावी नियंत्रण के बजाय औपचारिक बन सकती है।

आगे की राह

मामला अब संभावित पाँच-सदस्यीय संविधान पीठ के समक्ष जा सकता है। यह फैसला निर्वाचन आयोग की संस्थागत स्वतंत्रता और चुनावी निष्पक्षता के लिए महत्वपूर्ण होगा।

अनुच्छेद 22(1) और अवैध गिरफ्तारी

सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया है कि यदि गिरफ्तार व्यक्ति को गिरफ्तारी के आधार नहीं बताए गए या वकील तक पहुंच नहीं दी गई, तो उसे तत्काल रिहा किया जाना चाहिए। न्यायालय ने अनुच्छेद 22(1) के अधिकारों को मौलिक और गैर-परक्राम्य बताया।

प्रमुख संवैधानिक सुरक्षा

अनुच्छेद 22(1) के तहत गिरफ्तार व्यक्ति को गिरफ्तारी के आधार लिखित रूप में समझ आने वाली भाषा में बताना तथा अपनी पसंद के वकील से परामर्श का अवसर देना आवश्यक है। उसे 24 घंटे के भीतर मजिस्ट्रेट के समक्ष भी पेश करना होता है। इनका उल्लंघन गिरफ्तारी को असंवैधानिक बना देता है।

पुनः गिरफ्तारी के नियम

ऐसे व्यक्ति की पुनः गिरफ्तारी के लिए पुलिस को मजिस्ट्रेट के समक्ष आवेदन, विफलता के कारण और वरिष्ठ अधिकारी की स्वीकृति प्रस्तुत करनी होगी। मजिस्ट्रेट संतुष्ट होने पर ही पुनः गिरफ्तारी की अनुमति देगा। जांच किसी अन्य अधिकारी को सौंपी जाएगी और विभागीय जांच भी होगी।

महत्व

फैसला व्यक्तिगत स्वतंत्रता को मजबूत करता है तथा अवैध गिरफ्तारी को महज 'प्रक्रियात्मक त्रुटि' मानकर सुधारने की प्रवृत्ति पर रोक लगाता है। न्यायालय ने उल्लंघन पर उचित मुआवजे का भी निर्देश दिया।

लद्दाख के लिए प्रस्तावित अनुच्छेद 371K

केंद्र सरकार ने लद्दाख को विशेष संवैधानिक सुरक्षा देने के लिए संविधान में नया अनुच्छेद 371K जोड़ने का प्रस्ताव रखा है। यह गृह मंत्रालय तथा Apex Body, Leh (ABL) और Kargil Democratic Alliance (KDA) के बीच बनी सैद्धांतिक सहमति के बाद सामने आया है।

अनुच्छेद 371 की पृष्ठभूमि

मूल अनुच्छेद 371 वर्ष 1950 में भाग-B राज्यों के एकीकरण और संक्रमणकालीन केंद्रीय निगरानी के लिए बनाया गया था। 1956 के राज्य पुनर्गठन के बाद इसका स्वरूप बदला और आगे चलकर विभिन्न क्षेत्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप अनुच्छेद 371A से 371J तक विशेष प्रावधान विकसित हुए। यह असममित संघवाद का उदाहरण है।

371K की संभावित विशेषताएँ

प्रस्तावित व्यवस्था में लद्दाख के लिए प्रत्यक्ष निर्वाचित UT-स्तरीय निकाय को विधायी, कार्यकारी, वित्तीय और नियोजन शक्तियाँ मिल सकती हैं। भूमि, संस्कृति, भाषा, वन, पर्यावरण, प्राकृतिक संसाधन तथा प्रशासन पर विशेष अधिकार प्रस्तावित हैं।

महत्व

यह किसी बिना विधानसभा वाले केंद्रशासित प्रदेश को वास्तविक विधायी शक्तियाँ देने का पहला महत्वपूर्ण प्रयोग होगा। इसकी प्रभावशीलता अंततः 371K की अंतिम संवैधानिक भाषा पर निर्भर करेगी।

वन अधिकार अधिनियम, 2006 और ग्राम सभा की सहमति

जनजातीय कार्य मंत्रालय के अनुसार FRA, 2006 में वन मंजूरी के लिए ग्राम सभा की सहमति का स्पष्ट प्रावधान नहीं है। हालांकि, वन भूमि के गैर-वानिकी उपयोग से पहले FRA प्रक्रिया पूरी करने और ग्राम सभा से NOC लेने के सरकारी दिशा-निर्देश लागू हैं।

रिपोर्ट एवं सूचकांक



भारत WEF यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक 2026 में 31वें स्थान पर

भारत विश्व आर्थिक मंच (WEF) के यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक 2026 में 31वें स्थान पर रहा। इस सूचकांक में 110 अर्थव्यवस्थाओं का आकलन किया गया और इसे 25 सितंबर 2026 को प्रकाशित किया गया।

- ❖ भारत 2024 के सूचकांक में 39वें स्थान से नौ स्थान ऊपर चढ़कर 31वें स्थान पर पहुँचा, जबकि जापान ने 2026 संस्करण में पहला स्थान हासिल किया।

यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक

- ❖ यात्रा एवं पर्यटन विकास सूचकांक (TTDI) एक वैश्विक सूचकांक है जो सतत और लचीले पर्यटन विकास का समर्थन करने वाली स्थितियों को मापता है।
- ❖ यह केवल पर्यटक आगमन या पर्यटन व्यय को नहीं मापता, बल्कि यात्रा और पर्यटन क्षेत्र के दीर्घकालिक विकास से जुड़े कारकों को कवर करता है।

2026 सूचकांक में भारत की स्थिति

- ❖ भारत की 31वीं रैंक ने उसे 2026 संस्करण में बेहतर प्रदर्शन करने वाले बड़े पर्यटन बाजारों में शामिल कर दिया है।
- ❖ भारत का स्थिति लागत-प्रतिस्पर्धी यात्रा, सांस्कृतिक संसाधनों, पर्यटन बुनियादी ढांचे और व्यावसायिक यात्रा सुविधाओं के कारण सुधरा।

पर्यटन प्रतिस्पर्धात्मकता के प्रमुख घटक

- ❖ **लागत प्रतिस्पर्धात्मकता** पर्यटन सूचकांकों में एक प्रमुख कारक है, जिसमें यात्रा की वहनीयता, मूल्य स्तर और सेवा लागत शामिल हैं।
- ❖ **सांस्कृतिक संसाधन** में विरासत स्थल, परंपराएँ, त्योहार और संग्रहालय शामिल हैं, जो पर्यटन के अपेक्षित मांग का समर्थन करते हैं।
- ❖ **पर्यटन बुनियादी ढांचा** में परिवहन संपर्क, आवास और आगंतुक सुविधाएँ शामिल हैं।
- ❖ **व्यावसायिक यात्रा सुविधाओं** में सम्मेलन स्थल, कनेक्टिविटी और कॉर्पोरेट यात्रा के लिए संबंधित सेवाएँ शामिल हैं।

जेंडर सैपशाट रिपोर्ट 2026

17 सितंबर 2026 को संयुक्त राष्ट्र महिला (UN Women) और संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक मामलों के विभाग (UN DESA) ने जेंडर सैपशाट 2026 जारी किया।

- ❖ यह सभी 17 सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) में लैंगिक समानता की दिशा में वैश्विक प्रगति का आकलन करता है।

प्रमुख निष्कर्ष

- ❖ **लैंगिक समानता:** वर्तमान गति से वैश्विक स्तर पर लैंगिक समानता हासिल करने में 171 वर्ष लग सकते हैं।
- ❖ **न्यायपालिका:** विश्व स्तर पर सर्वोच्च न्यायालयों में महिलाओं का नेतृत्व 20% से कम है।
- ❖ **आर्थिक असुरक्षा:** 2024 में 9.9% महिलाएँ चरम गरीबी में रह रही थीं, जबकि पुरुषों में यह आंकड़ा 9.5% था। वर्तमान गति से 2030 तक 1.1 अरब महिलाएँ और लड़कियाँ खाद्य असुरक्षा का शिकार रह सकती हैं।
- ❖ **प्रौद्योगिकी:** वैश्विक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) कार्यबल में महिलाओं की हिस्सेदारी केवल 22% है और वरिष्ठ AI नेतृत्व में 14% से कम।
- ❖ **जलवायु संवेदनशीलता:** लगभग 2.9 अरब महिलाएँ और लड़कियाँ उन देशों में रहती हैं जो जलवायु और भूभौतिकीय खतरों के प्रति उच्च या बहुत उच्च रूप से संवेदनशील हैं।
- ❖ **वित्तपोषण:** महिला अधिकार संगठनों के लिए फंडिंग 2023 और 2024 के बीच 28% कम हो गई।

सिफारिशें

- ❖ **लैंगिक संस्थानों को मजबूत करना:** राष्ट्रीय लैंगिक समानता तंत्रों को स्पष्ट जनादेश, पर्याप्त स्टाफ और पूर्वानुमेय फंडिंग प्रदान करना।
- ❖ **कानूनी अधिकारों की खाई को पाटना:** प्रभावी कार्यान्वयन और प्रवर्तन तंत्रों के माध्यम से महिलाओं के कानूनी अधिकारों में 36 प्रतिशत अंक की खाई को पाटना।
- ❖ **लैंगिक-उत्तरदायी बजट को बढ़ावा देना:** लैंगिक-उत्तरदायी बजट का विस्तार करना तथा व्यय, परिणाम और प्रभाव को ट्रैक करने के लिए प्रणालियाँ स्थापित करना।
- ❖ **समावेशी नेतृत्व सुनिश्चित करना:** हाशिए पर स्थित समूहों, जिनमें स्वदेशी समुदाय, जातीय अल्पसंख्यक और दिव्यांग व्यक्ति शामिल हैं, की महिलाओं और लड़कियों को निर्णय-निर्माण में भागीदारी सुनिश्चित करना।

सामाजिक परिदृश्य

पीएसीएस: ग्रामीण आजीविका का रूपांतरण

25 सितंबर 2026 को ओडिशा सरकार ने 'संबंध' नामक एक विशाल सदस्यता अभियान शुरू किया, जिसका उद्देश्य राज्य भर में प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों (पीएसीएस) को मजबूत करना है।

पीएसीएस क्या हैं?

- ❖ पीएसीएस अल्पकालिक सहकारी ऋण संरचना की जमीनी स्तर की इकाइयाँ हैं।
- ❖ ये सीधे ग्रामीण (कृषि) उधारकर्ताओं के बीच कार्य हैं, उन्हें ऋण उपलब्ध कराती हैं, दिए गए ऋणों की वसूली करती हैं तथा वितरण और विपणन संबंधी कार्य भी करती हैं।

ग्रामीण आजीविका को मजबूत करने में पीएसीएस की क्या भूमिका है?

- ❖ **कृषि ऋण:** किसानों को कृषि उपकरण खरीदने के लिए सब्सिडी दर पर कृषि ऋण प्रदान करती हैं।
- ❖ **कृषि आदानों की आपूर्ति:** किसानों को उर्वरक, बीज, कीटनाशक और कृषि उपकरण जैसे कृषि आदान उपलब्ध कराती हैं।
- ❖ **किसानों की आय में सुधार:** किसानों को उनकी कृषि उपज के विपणन में सहायता करती हैं तथा बेहतर बाजार खोजने में सहयोग देती हैं, जिससे किसानों की आय बढ़ती है और बिचौलियों पर निर्भरता कम होती है।
- ❖ **वित्तीय साक्षरता बढ़ाना:** किसानों की वित्तीय साक्षरता और जागरूकता बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएँ आयोजित करती हैं, जिससे वे वित्तीय निर्णय ले सकें।
- ❖ **वित्तीय समावेशन को बढ़ावा:** किसानों को बचत करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं, उनसे जमा स्वीकार करती हैं, योग्य उधारकर्ताओं को ऋण देती हैं और वसूली करती हैं, जिससे वित्तीय समावेशन को बढ़ावा मिलता है।

पेंशन सखियां: पेंशन सहायता से सशक्त होगा ग्रामीण भारत

15 सितंबर 2026 को ग्रामीण विकास विभाग और पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण (PFRDA) ने ग्रामीण भारत में 'पेंशन सखियों' का सामुदायिक-आधारित नेटवर्क स्थापित करने हेतु एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किया।

पेंशन सखियां क्या हैं?

- ❖ **सामुदायिक-आधारित नेटवर्क:** यह ग्रामीण परिवारों, विशेष रूप से स्वयं सहायता समूहों (SHG) की सदस्यों, ग्रामीण महिलाओं और लखपति दीदियों के बीच पेंशन जागरूकता तथा सेवानिवृत्ति की योजना को बढ़ावा देने वाला एक विश्वसनीय सुविधा प्रदान करने वाला सामुदायिक नेटवर्क है।
- ❖ **सामुदायिक नेटवर्क का लाभ:** यह पहल दीनदयाल अंत्योदय योजना-राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (DAY-NRLM) के नेटवर्क का उपयोग करती है।
- ❖ **घर-घर सहायता:** यह ग्रामीण परिवारों और महिलाओं को सेवानिवृत्ति योजना (Retirement Planning) तथा राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली (NPS) के संबंध में जानकारी उपलब्ध कराएगी।

पेंशन सखियों की आवश्यकता क्यों पड़ी?

- ❖ **वित्तीय साक्षरता का अभाव:** ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी बहुत से लोग डिजिटल बैंकिंग, पेंशन योजनाओं और उनके लाभों से अनजान हैं। पेंशन सखियां उन्हें इन योजनाओं के बारे में सरल भाषा में समझाती हैं।
- ❖ **आय की सुभेद्यता:** कृषि, अनौपचारिक रोजगार और छोटे उद्यमों पर निर्भर परिवारों को अक्सर अनिश्चित आय और आर्थिक संकटों का सामना करना पड़ता है।

सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

- ❖ यह दीर्घकालिक बचत और सेवानिवृत्ति की तैयारी को बढ़ावा देता है, जिससे आय के संकटों के प्रति सुभेद्यता कम होती है।
- ❖ यह वित्तीय समावेशन में पेंशन को शामिल कर ग्रामीण आबादी को अधिक सुरक्षित और आत्मनिर्भर बनाता है।

सामुदायिक कैंडर: अंतिम छोर तक ग्रामीण विकास की रीढ़

प्रशिक्षित जमीनी कार्यकर्ताओं का एक विशाल समूह आजीविका, स्वास्थ्य, पोषण, आवास और वित्तीय समावेशन जैसी आवश्यक सेवाओं को ग्रामीण परिवारों तक पहुँचाकर अंतिम छोर तक सेवा वितरण को मजबूत कर रहा है।

सामुदायिक कैंडर कौन हैं?

- ❖ **सामुदायिक कैंडर प्रशिक्षित जमीनी कार्यकर्ता होते हैं,** जो ग्रामीण परिवारों और सरकारी संस्थानों के बीच सेतु का काम करते हैं। वे जागरूकता बढ़ाने, योजनाओं तक पहुँच सुनिश्चित करने, सेवा वितरण और कई क्षेत्रों में व्यवहार परिवर्तन को सुविधाजनक बनाते हैं।
- ❖ **नेटवर्क का पैमाना:** इस पारिस्थितिकी तंत्र में 9 लाख से अधिक सामुदायिक संसाधन व्यक्ति (Community Resource Persons), 10.40 लाख आशा कार्यकर्ता और 10.58 लाख आंगनवाड़ी कार्यकर्ता शामिल हैं, साथ ही सहायक नर्स और अन्य फ्रंटलाइन कार्यकर्ता भी हैं।

योजना एवं कार्यक्रम



राष्ट्रीय पोषण माह 2026

केंद्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्रालय ने 9 सितंबर 2026 को राष्ट्रीय पोषण माह का 9वां संस्करण आरम्भ किया। यह एक माह लंबा अभियान 9 सितंबर से 8 अक्टूबर 2026 तक चला और इसमें आहार विविधता, प्रोटीन सेवन तथा आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से समुदाय-नेतृत्व वाले पोषण वितरण पर ध्यान केंद्रित किया गया है। 2026 संस्करण की थीम “हमारी आंगनवाड़ी, हमारी जिम्मेदारी” है,

आंगनवाड़ी केंद्र और पोषण सेवाएँ

- भारत में 14 लाख से अधिक आंगनवाड़ी केंद्र हैं, जो 7.5 करोड़ से अधिक बच्चों और 1.10 करोड़ गर्भवती एवं स्तनपान कराने वाली महिलाओं को स्वास्थ्य एवं पोषण सेवाएँ प्रदान करते हैं।
- आंगनवाड़ी केंद्र एकीकृत बाल विकास सेवा (आईसीडीएस) प्रणाली के अंतर्गत कार्य करते हैं और पूरक पोषण, प्री-स्कूल शिक्षा, स्वास्थ्य रेफरल समर्थन तथा पोषण परामर्श प्रदान करते हैं।
- उत्तर प्रदेश में आंगनवाड़ी कार्यकर्ता गर्म पके भोजन पर वास्तविक समय डेटा एंटी के लिए स्मार्टफोन का उपयोग करती हैं।
- पोषण कार्यक्रमों में डिजिटल निगरानी का उपयोग स्थानीय स्तर पर सेवा वितरण, भोजन वितरण और लाभार्थी-संबंधी डेटा दर्ज करने के लिए किया जाता है।

पूरक पोषण कार्यक्रम और आहार विविधता

- पूरक पोषण कार्यक्रम (एसएनपी) आंगनवाड़ी केंद्रों के माध्यम से बच्चों, गर्भवती महिलाओं और स्तनपान कराने वाली माताओं को खाद्य सहायता प्रदान करता है।
- नए निर्देशों के अनुसार आंगनवाड़ी केंद्रों को एसएनपी मेनू बोर्ड प्रदर्शित करने होंगे, जिनमें कार्यक्रम के अंतर्गत दैनिक भोजन आवंटन और पात्रताएँ सूचीबद्ध होंगी।
- 2026 अभियान आहार विविधता पर जोर देता है, जिसमें बाजरा, दालें, बीज, दूध और पशु-स्रोत वाले खाद्य पदार्थ शामिल हैं।

उत्तराखंड ने सेवा संकल्प अभियान आरम्भ

उत्तराखंड सेवा संकल्प अभियान पूरे राज्य में 17 सितंबर से 17 अक्टूबर 2026 तक चलेगा। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने 11 सितंबर 2026 को इस एक माह लंबे अभियान की घोषणा की। इसका लॉन्च दिनांक 17 सितंबर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के जन्मदिन के साथ मेल खाता है।

अभियान का उद्देश्य और ढांचा

- यह अभियान विकसित भारत 2047 की दृष्टि से जुड़ा है, जो 2047 तक विकसित भारत के राष्ट्रीय लक्ष्य से संबंधित है।

- कार्यक्रम में सेवा, जन भागीदारी, संवाद और नवाचार को मुख्य विषयों के रूप में अपनाया गया है।
- छात्रों, युवाओं, महिलाओं, लाभार्थियों, अभिभावकों, जनप्रतिनिधियों, सामाजिक संगठनों और नागरिकों को शामिल करने के लिए ग्यारह प्रमुख कार्यक्रम प्रस्तावित किए गए हैं।

अभियान के अंतर्गत प्रमुख गतिविधियाँ

- अभियान ढांचे में कई नामित गतिविधियाँ शामिल हैं। “आशीर्वाद का दिया” के अंतर्गत दीप प्रज्वलन कार्यक्रम आयोजित होंगे, “मेरे सपनों का भारत-चित्र सेवा” के अंतर्गत शैक्षणिक संस्थानों में प्रतियोगिताएँ होंगी, “नमो सेवा-अनकही कहानियाँ” के अंतर्गत स्कूल नाटक प्रस्तुत किए जाएंगे तथा “आंगन मिलन सेवा” मातृ एवं बाल स्वास्थ्य से संबंधित आंगनवाड़ी केंद्रों की गतिविधियों पर केंद्रित होगी।
- “सेवा: मेरा योगदान” कार्यक्रम में वृक्षारोपण, स्वच्छता अभियान और शिक्षण गतिविधियाँ शामिल होंगी। अभियान में केंद्र और राज्य सरकार की योजनाओं से जुड़े लाभार्थी कहानियाँ और स्थानीय परिवर्तन भी प्रस्तुत किए जाएंगे।

जिला-स्तरीय भागीदारी

यह अभियान उत्तराखंड के प्रत्येक जिले में आयोजित किया जाएगा तथा जिला प्रभारी मंत्री इसके क्रियान्वयन में भाग लेंगे। युवाओं की भागीदारी को कार्यक्रम ढांचे का एक प्रमुख घटक बनाया गया है।

सहकारिता क्षेत्र में विकेंद्रित अनाज भंडारण योजना

वर्ष 2023 में शुरू ‘सहकारिता क्षेत्र में विकेंद्रित अनाज भंडारण योजना’ का उद्देश्य पैक्स (PACS) के माध्यम से भंडारण, प्रसंस्करण, खरीद और वितरण प्रणाली को मजबूत करना है। विभिन्न सरकारी योजनाओं के एकीकरण द्वारा संचालित यह पहल 11 राज्यों में प्रायोगिक दौर से शुरू होकर देश की खाद्य सुरक्षा को निरंतर विस्तार दे रही है।

बढ़ती कृषि अर्थव्यवस्था के लिए भंडारण क्षमता का निर्माण :

- भारत की अनाज भंडारण प्रणाली पारंपरिक भंडारण प्रथाओं, विकेंद्रीकृत स्थानीय प्रणालियों और आधुनिक बुनियादी ढांचे के संयोजन के माध्यम से विकसित हुई है।
- इस एकीकृत दृष्टिकोण ने खाद्य संरक्षण को मजबूत किया है और देश की खाद्य सुरक्षा को समर्थन दिया है।
- मिट्टी के डिब्बे, भूमिगत गड्ढे और मिट्टी से बने भंडारण ढांचे जैसी पारंपरिक भंडारण विधियाँ गोदामों और साइलो-आधारित बुनियादी ढांचे के साथ-साथ जारी हैं।
- हालाँकि, कृषि उत्पादन में वृद्धि और खाद्य सुरक्षा की बढ़ती आवश्यकताओं के कारण देश भर में आधुनिक, विकेंद्रीकृत भंडारण सुविधाओं की आवश्यकता बढ़ गई है।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी

मिशन मौसम और डॉपलर वेदर रडार

जलवायु परिवर्तन के कारण बढ़ती चरम मौसमी घटनाओं से निपटने के लिए हाल ही में भारत सरकार ने 'मिशन मौसम' को मंजूरी दी है, जिसमें डॉपलर वेदर रडार नेटवर्क का विस्तार एक प्रमुख घटक है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **मिशन मौसम:** यह पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के अधीन एक बहुआयामी परियोजना है। इसका मुख्य उद्देश्य मौसम पूर्वानुमान को अत्यधिक सटीक बनाना और 'नाउकास्टिंग' (Nowcasting - कुछ घंटों पहले की भविष्यवाणी) की क्षमताओं को पंचायत स्तर तक ले जा ना है।
- ❖ **डॉपलर वेदर रडार (DWR):** यह पारंपरिक रडार से एक कदम आगे की तकनीक है, जो डॉपलर प्रभाव (Doppler Effect) के सिद्धांत पर आधारित है।

कार्यप्रणाली

- ❖ **डॉपलर प्रभाव:** जब कोई गतिमान वस्तु (जैसे बादल या बारिश की बूंदें) रडार की ओर आती है या उससे दूर जाती है, तो रडार द्वारा उत्सर्जित और वस्तु से टकराकर वापस आने वाली माइक्रोवेव तरंगों की आवृत्ति में बदलाव आ जाता है।
- ❖ **सटीक डेटा संकलन:** इस आवृत्ति परिवर्तन का विश्लेषण करके DWR न केवल यह बताता है कि बादल कितनी दूर हैं (तीव्रता), बल्कि यह भी मापता है कि हवा और बादलों की गति और दिशा क्या है।

रणनीतिक एवं वैज्ञानिक महत्व

- ❖ **आपदा प्रबंधन:** बादल फटने, अचानक आने वाली बाढ़ और चक्रवातों के निर्माण की पूर्व-चेतावनी DWR की मदद से अत्यंत सटीकता से दी जा सकती है, जिससे जान-माल का नुकसान कम होता है।
- ❖ **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का एकीकरण:** मिशन मौसम के तहत DWR से प्राप्त विशाल डेटा को AI और मशीन लर्निंग (ML) मॉडल में फीड किया जाएगा, जिससे पूर्वानुमान मॉडलों की सटीकता कई गुना बढ़ जाएगी।

भारत का पहला eVTOL एयरक्राफ्ट

शहरी यातायात की भीड़भाड़ को कम करने के लिए 'अर्बन एयर मोबिलिटी' के क्षेत्र में भारत के पहले eVTOL एयरक्राफ्ट प्रोटोटाइप 'e200X' का विकास चर्चा में है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **eVTOL क्या है?:** इसका पूर्ण रूप 'इलेक्ट्रिक वर्टिकल टेकऑफ़ एंड लैंडिंग' है। ये ऐसे उन्नत विमान हैं जो हेलीकॉप्टर की तरह सीधे (लंबवत) उड़ान भर सकते हैं और उतर सकते हैं, लेकिन इन्हें चलाने के लिए जेट ईंधन के बजाय पूरी तरह से बैटरी का उपयोग होता है।
- ❖ **e200X:** यह एक स्वदेशी रूप से विकसित एयर-टैक्सी प्रोटोटाइप है, जिसे विशेष रूप से भारत के घनी आबादी वाले शहरों में परिवहन के लिए डिजाइन किया गया है।

तकनीकी आधार

- ❖ **डिस्ट्रीब्यूटेड इलेक्ट्रिक प्रोपल्शन (DEP):** पारंपरिक हेलीकॉप्टरों में एक बड़ा मुख्य रотор होता है, जबकि eVTOL में कई छोटे इलेक्ट्रिक मोटर और प्रोपेलर लगे होते हैं। यदि एक मोटर फेल भी हो जाए, तो अन्य मोटर विमान को सुरक्षित लैंड करा सकते हैं (इसे Redundancy कहते हैं)।
- ❖ **बैटरी तकनीक:** यह उच्च घनत्व वाले लिथियम-आयन (Li-ion) या सॉलिड-स्टेट बैटरी पैक पर निर्भर करता है, जो विमान को उड़ान भरने के लिए आवश्यक भारी थ्रस्ट (Thrust) प्रदान करते हैं।

संभावनाएं एवं चुनौतियां

- ❖ **पर्यावरणीय और आर्थिक लाभ:** ये विमान शून्य कार्बन उत्सर्जन करते हैं और हेलीकॉप्टरों की तुलना में बेहद शांत (Low noise footprint) होते हैं। लंबी अवधि में इनकी परिचालन लागत (Operating cost) भी कम है।
- ❖ **नियामक चुनौतियां (Regulatory Hurdles):** वर्तमान में नागरिक उड्डयन महानिदेशालय (DGCA) के पास इनके वाणिज्यिक उपयोग के लिए स्पष्ट एयर-ट्रैफिक प्रबंधन (UTM) नियम नहीं हैं। इसके अलावा वर्टीपोर्ट्स (Vertiports - जहाँ से ये उड़ान भरेंगे) के निर्माण के लिए नए बुनियादी ढांचे की आवश्यकता है।

डाइल्यूशन रेफ्रिजरेटर

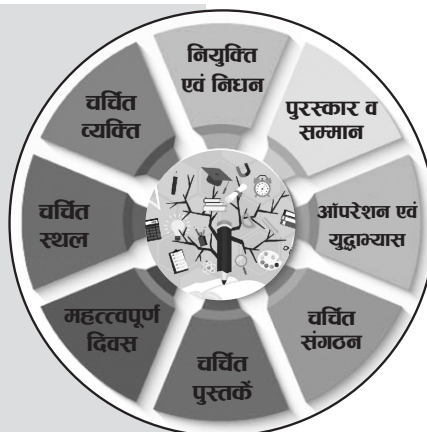
हाल ही में 'राष्ट्रीय क्वांटम मिशन' और क्वांटम कंप्यूटिंग के क्षेत्र में हो रहे वैश्विक अनुसंधानों के कारण 'डाइल्यूशन रेफ्रिजरेटर' अत्यधिक चर्चा में रहा है। यह क्वांटम कंप्यूटरों को कार्य करने योग्य वातावरण प्रदान करने वाली सबसे महत्वपूर्ण तकनीक है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **यह क्या है?:** यह एक अत्याधुनिक क्रायोजेनिक उपकरण है, जिसका उपयोग किसी भी प्रणाली को 'परम शून्य' (Absolute Zero अर्थात -273.15°C या 0 केल्विन) के बेहद करीब (कुछ मिली-केल्विन तक) ठंडा करने के लिए किया जाता है।
- ❖ **आवश्यकता क्यों?:** क्वांटम कंप्यूटर 'क्यूबिट्स' पर काम करते हैं। क्यूबिट्स बाहरी तापमान और विद्युत चुम्बकीय शोर के प्रति अत्यधिक संवेदनशील होते हैं। कमरे के तापमान पर इनकी क्वांटम अवस्था नष्ट हो जाती है (इसे डीकोहेरेंस/Decoherence कहते हैं)। अतः इन्हें स्थिर रखने के लिए अत्यधिक ठंडे वातावरण की आवश्यकता होती है।

डेटा बैंक

डेटा बैंक में प्रतियोगी परीक्षाओं, विशेषकर प्रारंभिक एवं मुख्य परीक्षा में प्रायः उपयोग होने वाले महत्वपूर्ण तथ्य, आँकड़े एवं सूचनाएँ सुव्यवस्थित रूप से संकलित की गई हैं। इसमें सम्मिलित सभी आँकड़े एवं तथ्य PIB, विभिन्न मंत्रालयों की आधिकारिक वेबसाइटों तथा सरकार की प्रामाणिक पत्र-पत्रिकाओं से संकलित किए गए हैं।



राष्ट्रीय

खुदरा मुद्रास्फीति (CPI) एवं आर्थिक सूचकांक

आर्थिक संकेतक (मुद्रास्फीति दर)	ग्रामीण क्षेत्र (%)	शहरी क्षेत्र (%)	संयुक्त दर (%)
सामान्य उपभोक्ता मूल्य सूचकांक (General CPI)	4.16	3.14	3.65
उपभोक्ता खाद्य मूल्य सूचकांक (CFPI)	6.02	4.99	5.66
सामान्य CPI सूचकांक मूल्य (आधार: 2012 = 100)	195.4	190.3	193.0
व्यक्ति सूचकांक मूल्य (आधार: 2012 = 100)	200.8	208.1	203.4
टमाटर (Tomato) मुद्रास्फीति दर	-	-	-47.91

खरीफ फसल बुवाई क्षेत्र

फसल श्रेणी	वर्तमान बुवाई क्षेत्र (लाख हेक्टेयर)	पिछले वर्ष का क्षेत्र (लाख हेक्टेयर)	प्रवृत्ति (Trend)
कुल खरीफ बुवाई (Total Kharif)	1031.56	1010.52	वृद्धि
धान (Paddy)	369.05	349.49	वृद्धि
दलहन (Pulses - अरहर, उड़द, मूंग)	120.18	113.69	वृद्धि
श्री अन्न एवं मोटे अनाज (Coarse Cereals)	181.11	176.39	वृद्धि
तिलहन (Oilseeds - सोयाबीन, मूंगफली)	186.77	185.13	वृद्धि
कपास (Cotton)	111.07	122.15	गिरावट
गन्ना (Sugarcane)	57.68	57.11	वृद्धि

भारत की कुल नवीकरणीय ऊर्जा (RE) क्षमता

ऊर्जा का स्रोत	स्थापित क्षमता (GW)	कुल RE में हिस्सेदारी (%)	वर्ष 2030 का लक्ष्य (GW)
कुल नवीकरणीय ऊर्जा (Total RE)	200.0+	46.3% (कुल विद्युत का)	500.0
सौर ऊर्जा (Solar Power)	90.76	45.1%	292.0
पवन ऊर्जा (Wind Power)	47.30	23.5%	100.0
जलविद्युत (Large Hydro)	46.90	~23.4%	70.0
बायोमास एवं अपशिष्ट (Biomass/Waste)	10.70	5.3%	-

पर्यावरण एवं जैव विविधता

एक सींग वाला गैंडा: असम की वैश्विक उपलब्धि

नवीनतम आँकड़ों के अनुसार, असम 3,260 एक सींग वाले गैंडों का घर बन गया है। यह आँकड़ा प्रजाति की वैश्विक आबादी (4,075) का लगभग 80% है, जो भारत के संरक्षण प्रयासों की एक अभूतपूर्व सफलता है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **वैज्ञानिक नाम:** राइनोसिरस यूनिर्कोर्निस (Rhinoceros unicornis)।
- ❖ **प्रमुख विशेषता:** यह गैंडों की सभी प्रजातियों में सबसे बड़ा है। इसकी त्वचा पर विशिष्ट सिलवटें होती हैं, जो 'कवच' जैसी दिखती हैं।
- ❖ **आवास और वितरण:**
 - + **वैश्विक:** मुख्य रूप से भारत और नेपाल (752 गैंडे) की तराई बेल्ट में।
 - + **भारत में:** असम का काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (2,600 से अधिक गैंडों के साथ विश्व का सबसे बड़ा आश्रय स्थल), पोबितोरा वन्यजीव अभयारण्य (विश्व में गैंडों का उच्चतम जनसंख्या घनत्व), मानस और ओरंग राष्ट्रीय उद्यान।
- ❖ **संरक्षण स्थिति:**
 - + **IUCN रेड लिस्ट:** अतिसंवेदनशील (Vulnerable)।
 - + **वन्यजीव (संरक्षण) अधिनियम, 1972:** अनुसूची I (सर्वोच्च सुरक्षा)।
- ❖ **इंडियन राइनो विजन 2.0 (IRV 2.0):** इसका लक्ष्य 2030 तक असम में गैंडों की आबादी को 4,500 से 5,000 तक पहुँचाना और उनके आवास का विस्तार करना है।

भारत का 'नेट जीरो पोर्टल' और NAPCC डैशबोर्ड लॉन्च

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने जलवायु लक्ष्यों की दिशा में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए 'इंडिया नेट जीरो पोर्टल' और 'NAPCC डैशबोर्ड' लॉन्च किया है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **नेट जीरो पोर्टल:** यह पोर्टल 2070 तक भारत के 'नेट जीरो' (शून्य कार्बन उत्सर्जन) लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में विभिन्न क्षेत्रों (ऊर्जा, उद्योग, परिवहन आदि) की प्रगति को ट्रैक करेगा।

- ❖ **NAPCC डैशबोर्ड:** यह राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना (NAPCC) के तहत 8 राष्ट्रीय मिशनों की प्रगति और कार्यान्वयन की निगरानी करता है।
- ❖ **केंद्रीकृत डेटाबेस:** यह 'राष्ट्रीय जलवायु परिवर्तन कार्य योजना' के तहत चल रहे 8 राष्ट्रीय मिशनों (जैसे- राष्ट्रीय सौर मिशन, हरित भारत मिशन आदि) के कार्यान्वयन और उपलब्धियों का एक केंद्रीकृत डेटाबेस प्रदान करेगा।
- ❖ **उपयोगिता:** यह पोर्टल न केवल घरेलू नीति-निर्माताओं की मदद करेगा, बल्कि वैश्विक सम्मेलनों में भारत की जलवायु प्रतिबद्धता को डेटा के साथ मजबूती से प्रस्तुत करेगा।
- ❖ **पंचामृत:** 2021 में ग्लासगो में आयोजित COP26 जलवायु शिखर सम्मेलन में भारत ने 5-सूत्रीय कार्ययोजना की घोषणा की थी, जिसे 'पंचामृत' नाम दिया गया। यह भारत को 2070 तक नेट जीरो बनाने का मुख्य रोडमैप है।

सेमीकॉन इंडिया 2026

SEMICON इंडिया 2026 का प्रधानमंत्री ने 17 सितंबर 2026 को नई दिल्ली के यशोभूमि में उद्घाटन किया। यह आयोजन भारत को केवल इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण से आगे बढ़कर पूर्ण सेमीकंडक्टर विनिर्माण हब में बदलने की दिशा में एक रणनीतिक कदम है।

मुख्य तथ्य

- ❖ **थीम:** "सिलिकॉन टू सिस्टम्स: बिल्डिंग द इकोसिस्टम"।
- ❖ **आयोजन की रूपरेखा:** इस आयोजन में 300 से अधिक अंतरराष्ट्रीय कंपनियों, 600 से अधिक प्रदर्शकों और वैश्विक उद्योग जगत के दिग्गजों ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य सेमीकंडक्टर आपूर्ति शृंखला को मजबूत करना है।
- ❖ **सेमीकॉन 2.0 का समर्थन:** यह कार्यक्रम जुलाई 2026 में लॉन्च किए गए 'सेमीकॉन 2.0' पर आधारित है, जिसके लिए ₹1,27,500 करोड़ का भारी परिव्यय रखा गया है।
- ❖ **प्राथमिक स्तंभ:** चिप डिजाइन (Chip design), उन्नत पैकेजिंग (Advanced packaging), फैब्रिकेशन सुविधाएं, और प्रतिभा विकास।
- ❖ **चिप-इन सेंटर (ChipIN Centre):** यह C-DAC के तहत स्थापित एक सुविधा है जो शैक्षणिक संस्थानों और 100 से अधिक स्टार्ट-अप्स को उन्नत चिप-डिजाइन टूल (EDA tools) प्रदान कर रही है।

आर्थिक और रणनीतिक महत्व

- ❖ **आयात निर्भरता में कमी:** कोविड-19 महामारी के दौरान वैश्विक चिप की कमी ने आपूर्ति शृंखला की कमजोरियों को उजागर किया था। भारत का 'पैक्स सिलिका' (Pax Silica) गठबंधन में शामिल होना (2026) क्रिटिकल मिनरल्स और फैब्रिकेशन में वैश्विक लचीलापन सुनिश्चित करेगा।
- ❖ **रोजगार और कौशल विकास:** सेमीकॉन 2.0 का लक्ष्य इस दशक के अंत तक 85,000 कुशल सेमीकंडक्टर इंजीनियर तैयार करना है। भारत वर्तमान में अपनी आवश्यकता के 99.2% मोबाइल फोन स्वयं बना रहा है और सेमीकंडक्टर इस विनिर्माण को नई ऊंचाई देगा।

राज्य परिदृश्य

इसके अंतर्गत हमने विभिन्न राज्यों द्वारा शुरू की गयी योजनाओं एवं कार्यक्रमों, राज्य स्तर पर आयोजित बैठक एवं सम्मेलनों, सरकारों द्वारा जारी नवीनतम रिपोर्ट्स तथा अन्य प्रमुख घटनाक्रमों को संक्षिप्त रूप में प्रस्तुत किया है, जिनसे सामान्य प्रतियोगी परीक्षाओं में अक्सर प्रश्न पूछे जाते हैं।



उत्तर प्रदेश

स्वच्छ वायु सर्वेक्षण 2026

जारी 'स्वच्छ वायु सर्वेक्षण 2026' (Swachh Vayu Sarvekshan 2026) के परिणामों में 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की श्रेणी में उत्तर प्रदेश के लखनऊ शहर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

मुख्य तथ्य

- **शीर्ष रैंकिंग:** 10 लाख से अधिक आबादी वाले शहरों की श्रेणी में लखनऊ ने वायु गुणवत्ता सुधारने के सर्वोत्तम प्रयासों के लिए पहला स्थान हासिल किया है। इसके पश्चात् मध्य प्रदेश के इंदौर और जबलपुर का स्थान है।
- **प्रगति रिपोर्ट:** वर्ष 2026 के आकलन के अनुसार, 130 में से 108 शहरों ने 2017-18 के आधार स्तर की तुलना में अपने PM10 स्तरों में महत्वपूर्ण सुधार दर्ज किया है, जबकि 14 शहरों ने राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों (NAAQS) को पूरी तरह से प्राप्त कर लिया है।
- **मूल्यांकन का आधार:** यह सर्वेक्षण 'राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम' (NCAP) के तहत वायु प्रदूषण के विभिन्न स्रोतों को कम करने के लिए शहरों द्वारा किये गए ठोस प्रयासों का आकलन करता है।

राष्ट्रीय स्वच्छ वायु कार्यक्रम (NCAP)

NCAP को पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) द्वारा वर्ष 2019 में लॉन्च किया गया था। यह देश भर में वायु गुणवत्ता में सुधार के लिए एक दीर्घकालिक, समयबद्ध, राष्ट्रीय रणनीति है।

- इस कार्यक्रम का प्रमुख लक्ष्य 2019-20 के आधार वर्ष की तुलना में वर्ष 2025-26 तक शहरों में PM10 और PM2.5 की सांद्रता (concentration) में 40% तक की कमी लाना है।

उत्तर प्रदेश के पांच शहरों में 'भारत टैक्सी' सेवा लॉन्च

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और केंद्रीय सहकारिता राज्य मंत्री मुरलीधर मोहोले ने लखनऊ में एक कार्यक्रम के दौरान 'भारत टैक्सी' सेवा को आधिकारिक रूप से लॉन्च किया।

मुख्य तथ्य

- **लॉन्च वाले शहर:** यह सेवा राज्य के पांच प्रमुख शहरों-लखनऊ, गोरखपुर, वाराणसी, कानपुर और प्रयागराज में शुरू की गई है।

- **सहकारी मॉडल:** यह भारत की पहली सहकारी-नेतृत्व वाली राइड-हेलिंग सर्विस है, जिसे 'सहकार टैक्सी कोऑपरेटिव लिमिटेड' (STCL) द्वारा संचालित किया जाता है। इसका मूल सिद्धांत "डाइवर ही मालिक है" (Driver is the Owner) है।
- **शून्य कमीशन:** इसमें डाइवरों (जिन्हें 'सारथी' कहा जाता है) से कोई कमीशन नहीं लिया जाता है; पूरी कमाई सीधे उनके खाते में जाती है। इन पांच शहरों में लगभग 40,000 सारथियों ने पंजीकरण कराया है।
- **सामाजिक सुरक्षा:** डाइवरों को 5 लाख रुपये तक का सामाजिक सुरक्षा कवर दिया गया है और उन्हें ई-श्रम के तहत स्वास्थ्य और बीमा लाभों से जोड़ा जाएगा।

सहकारी मॉडल (Cooperative Model)

- सहकारिता या सहकारी मॉडल एक ऐसा व्यावसायिक ढांचा है जिसमें किसी उपक्रम का स्वामित्व और नियंत्रण उसके सदस्यों (जैसे- कर्मचारियों या उपभोक्ताओं) के पास होता है।
- इसके तहत लाभ का समान वितरण होता है और निर्णय लोकतांत्रिक तरीके से लिए जाते हैं।
- भारत टैक्सी में इस मॉडल के उपयोग से डाइवरों को केवल कर्मचारी न मानकर उन्हें हिस्सेदार बनाया गया है।

बिहार

बिहार में नए विश्वविद्यालयों की मंजूरी

मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में बिहार कैबिनेट ने राज्य में शिक्षा और महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए दो नए विश्वविद्यालयों की स्थापना के प्रस्तावों को मंजूरी दी है।

मुख्य तथ्य

- **नए विश्वविद्यालय:** कैबिनेट के फैसले के अनुसार, पटना में शर्मा सीता महिला विश्वविद्यालय (Maa Sita Women's University) और बेगूसराय में 'रामधारी सिंह दिनकर विश्वविद्यालय' की स्थापना की जाएगी।
- **कानूनी ढांचा एवं अधिकार क्षेत्र:** ये दोनों विश्वविद्यालय 'बिहार विशेष विश्वविद्यालय अधिनियम, 2026' के तहत प्रस्तावित हैं। रामधारी सिंह दिनकर विश्वविद्यालय का अधिकार क्षेत्र बेगूसराय और खगड़िया जिलों के घटक एवं संबद्ध कॉलेजों पर होगा।



UN \$ P4M : भारत का 'Reformed Multilateralism' दृष्टिकोण

सितंबर 2026 में संयुक्त राष्ट्र (UN) से जुड़े विमर्श में भारत ने 'सुधारित बहुपक्षवाद (Reformed Multilateralism)' की आवश्यकता पर विशेष जोर दिया। बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, युद्धों, संरक्षणवाद और वैश्विक संस्थाओं में प्रतिनिधित्व के असंतुलन के बीच भारत का मानना है कि वर्तमान वैश्विक शासन व्यवस्था को अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, पारदर्शी, समावेशी और प्रभावी बनाया जाना चाहिए।

P4M क्या है?

P4M (Partners for Multilateralism, International Law, Peace & Prosperity) बहुपक्षवाद, अंतरराष्ट्रीय कानून, शांति और समृद्धि को मजबूत करने की दिशा में सहयोग का मंच है। न्यूयॉर्क में आयोजित P4M शिखर सम्मेलन में भारत ने वैश्विक चुनौतियों से निपटने के लिए प्रभावी बहुपक्षीय सहयोग की आवश्यकता रेखांकित की।

वैश्विक व्यवस्था की प्रमुख चुनौतियाँ

- ❖ आज वैश्विक संस्थाएँ कई गंभीर चुनौतियों का सामना कर रही हैं- भू-राजनीतिक एवं रणनीतिक प्रतिस्पर्धा, युद्ध और क्षेत्रीय संघर्ष, जलवायु परिवर्तन, आतंकवाद एवं साइबर सुरक्षा, महामारी एवं स्वास्थ्य संकट, उभरती प्रौद्योगिकियाँ और AI, विकास वित्त की कमी, खाद्य, ईंधन, उर्वरक और वित्त यानी 4F संकट
- ❖ इन समस्याओं की प्रकृति वैश्विक है, इसलिए उनका समाधान भी सामूहिक कार्रवाई के माध्यम से ही संभव है।

भारत का 'Reformed Multilateralism'

- ❖ भारत बहुपक्षीय संस्थाओं में विकासशील देशों और Global South का अधिक प्रतिनिधित्व चाहता है। विशेष रूप से UN Security Council (UNSC) में सुधार भारत की प्रमुख प्राथमिकता है। भारत का तर्क है कि वर्तमान वैश्विक शक्ति-संतुलन और संस्थागत संरचना के बीच स्पष्ट असमानता है।
- ❖ भारत का दृष्टिकोण केवल संस्थाओं के विस्तार तक सीमित नहीं है, बल्कि अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान, पारदर्शी निर्णय-प्रक्रिया, संप्रभु समानता और समावेशी वैश्विक शासन पर आधारित है।

निष्कर्ष: भारत का लक्ष्य बहुपक्षवाद को कमजोर करना नहीं, बल्कि उसे 21वीं सदी की वास्तविकताओं के अनुरूप अधिक प्रतिनिधित्वपूर्ण, लोकतांत्रिक और प्रभावी बनाना है।

शंघाई सहयोग संगठन (SCO)

SCO का 26वाँ शिखर सम्मेलन 31 अगस्त-1 सितंबर 2026 को बिश्केक, किर्गिज गणराज्य में आयोजित हुआ। इस वर्ष संगठन ने अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे किए। 2001 में गठित SCO की शुरुआत 'शंघाई फाइव' से हुई थी। भारत और पाकिस्तान 2017 में पूर्ण सदस्य बने।

शंघाई सहयोग संगठन (SCO) : पृष्ठभूमि

- ❖ **उद्भव:** SCO की शुरुआत 'शंघाई फाइव' से हुई थी, जिसमें चीन, रूस, कजाकिस्तान, किर्गिजस्तान और ताजिकिस्तान शामिल थे।
- ❖ **स्थापना:** 15 जून 2001 को इसे औपचारिक रूप से शंघाई सहयोग संगठन (SCO) के रूप में स्थापित किया गया।
- ❖ **भारत की सदस्यता:** भारत और पाकिस्तान 2017 में पूर्ण सदस्य बने, जिससे संगठन का भौगोलिक एवं सामरिक महत्व और बढ़ गया।
- ❖ **सामूहिक रक्षा का अभाव:** NATO के विपरीत SCO में कोई सामूहिक रक्षा तंत्र नहीं है। यह मुख्यतः राजनीतिक संवाद, सुरक्षा सहयोग, आतंकवाद-रोधी प्रयास, आर्थिक सहयोग और क्षेत्रीय समन्वय का मंच है।
- ❖ **संस्थागत व्यवस्था:** SCO वर्तमान में 29 चार्टर निकायों और 40 से अधिक कार्य तंत्रों के माध्यम से सदस्य देशों के बीच नियमित सहयोग एवं संवाद को बढ़ावा देता है।

प्रमुख सहयोग क्षेत्र

- ❖ SCO का मुख्य फोकस आतंकवाद, अलगाववाद और उग्रवाद से मुकाबला, क्षेत्रीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग और कनेक्टिविटी है। बिश्केक घोषणा में आतंकवाद की कड़ी निंदा तथा पश्चिम एशिया और अफगानिस्तान में शांति पर जोर दिया गया।

भारत के लिए महत्व

- ❖ SCO भारत को चीन, रूस, ईरान, मध्य एशिया और पाकिस्तान के साथ संवाद का मंच देता है। यह आतंकवाद-रोधी सहयोग, अफगानिस्तान, ऊर्जा, व्यापार और कनेक्टिविटी में भारत के हितों को आगे बढ़ाने में सहायक है।

IMF-World Bank-WTO : वैश्विक आर्थिक शासन में सुधार

सितंबर 2026 में IMF, World Bank और WTO जैसे प्रमुख बहुपक्षीय आर्थिक संस्थानों में सुधार का मुद्दा वैश्विक आर्थिक शासन के संदर्भ में चर्चा में रहा। बदलते वैश्विक शक्ति-संतुलन, व्यापार संरक्षणवाद, बढ़ते ऋण, विकासशील देशों की वित्तीय आवश्यकताओं और वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं में अस्थिरता ने इन संस्थाओं की प्रभावशीलता तथा प्रतिनिधित्व पर प्रश्न उठाए हैं।

IMF : प्रतिनिधित्व और वित्तीय स्थिरता

- ❖ अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (IMF) वैश्विक मौद्रिक सहयोग, वित्तीय स्थिरता और भुगतान-संतुलन संकट से निपटने में महत्वपूर्ण

अंतरराष्ट्रीय संबंध व संघर्ष

18वाँ BRICS शिखर सम्मेलन: भारत के लिए अवसर और चुनौतियाँ

12-13 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में 18वें BRICS शिखर सम्मेलन का आयोजन किया गया। 2024 तक विस्तारित BRICS की वैश्विक GDP में हिस्सेदारी लगभग 36.8% हो गई, जबकि G7 की हिस्सेदारी 29% से कम रही। BRICS विश्व की लगभग आधी आबादी, 43.6% तेल उत्पादन और 72% दुर्लभ-पृथ्वी भंडार का प्रतिनिधित्व करता है।

विकास से भू-राजनीति तक

- ❖ 2006 में BRIC के रूप में शुरू हुआ समूह अब वैश्विक दक्षिण की आवाज के रूप में उभरा है। 2024 में मिस्र, इथियोपिया, ईरान, सऊदी अरब और UAE तथा 2025 में इंडोनेशिया के जुड़ने से इसका प्रभाव बढ़ा है।

भारत की रणनीतिक भूमिका

- ❖ भारत रणनीतिक स्वायत्तता और बहु-संरेखण की नीति के तहत BRICS, G20, QUAD और SCO में समानांतर भागीदारी करता है। भारत की पहल पर स्थापित न्यू डेवलपमेंट बैंक (NDB) ने विकास परियोजनाओं को वित्तीय समर्थन दिया है।

प्रमुख चुनौतियाँ

- ❖ चीन और रूस BRICS को पश्चिमी प्रभुत्व के विकल्प के रूप में देखते हैं, जबकि भारत आर्थिक सहयोग और वैश्विक संस्थागत सुधार पर जोर देता है। सदस्यों के बीच मतभेद तथा सर्वसम्मति आधारित निर्णय-प्रक्रिया भी प्रभावशीलता सीमित करती है।

आगे की राह

भारत को BRICS को डिजिटल सार्वजनिक अवसंरचना, जलवायु वित्त, स्वास्थ्य, महत्वपूर्ण खनिज, स्थानीय-मुद्रा भुगतान, आपूर्ति - शृंखला लचीलापन और समावेशी कनेक्टिविटी पर केंद्रित व्यावहारिक विकास मंच बनाना चाहिए।

सुधारित बहुपक्षवाद की आवश्यकता

विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने बढ़ती भू-राजनीतिक प्रतिस्पर्धा, संघर्षों और वैश्विक सहयोग पर दबाव के बीच 'सुधारित बहुपक्षवाद' की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने न्यूयॉर्क में आयोजित चंड शिखर सम्मेलन में यह बात कही।

वैश्विक व्यवस्था की चुनौतियाँ

- ❖ उन्होंने कहा कि वैश्विक शक्ति-संतुलन में बदलाव और रणनीतिक प्रतिस्पर्धा अंतरराष्ट्रीय सहयोग को कमजोर कर रही है। जलवायु

परिवर्तन, आतंकवाद, महामारी, उभरती प्रौद्योगिकी, विकास वित्त और आपदा-प्रबंधन जैसे मुद्दों पर सामूहिक सहयोग आवश्यक है।

4F संकट

जयशंकर ने ईंधन, खाद्य, उर्वरक और वित्त (4F) की आपूर्ति में व्यवधान को प्रमुख चुनौती बताया। भारत ने रणनीतिक निर्भरता कम करने के लिए आपूर्ति स्रोतों में विविधता और लचीली वैश्विक आपूर्ति शृंखलाओं पर जोर दिया।

सुधारित बहुपक्षवाद

भारत अधिक प्रतिनिधित्व, पारदर्शी निर्णय-प्रक्रिया, अंतरराष्ट्रीय कानून के सम्मान और समावेशी संस्थाओं की वकालत करता है। विशेष रूप से UNSC सुधार भारत की प्रमुख प्राथमिकता है।

भारत के लिए महत्व

यह दृष्टिकोण भारत की रणनीतिक स्वायत्तता, ग्लोबल साउथ नेतृत्व और नियम-आधारित अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को मजबूत करता है तथा वैश्विक समस्याओं के समाधान में सहयोग को बढ़ावा देता है।

अरब सागर में भारत-पाक नौसैनिक टकराव

हाल ही में पाकिस्तानी नौसैनिक पोत PNS Hunain ने अरब सागर में अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में भारतीय नौसैनिक पोत के पास तेज गति से आकर असुरक्षित तरीके से संचालन किया, जिससे मामूली टक्कर हुई। भारतीय पोत को नुकसान नहीं हुआ, जबकि पाकिस्तानी पोत क्षतिग्रस्त हुआ।

1991 समझौते का उल्लंघन

भारत ने इस घटना को अस्वीकार्य और गैर-पेशेवर बताते हुए 1991 के भारत-पाक समझौते के अनुच्छेद 10 के उल्लंघन का आरोप लगाया। इसके तहत दोनों देशों के नौसैनिक पोत अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में एक-दूसरे से 3 समुद्री मील से कम दूरी पर नहीं आ सकते।

समुद्री कानून

UNCLOS के अनुसार प्रादेशिक समुद्र 12 समुद्री मील तथा विशेष आर्थिक क्षेत्र (EEZ) 200 समुद्री मील तक होता है। यह घटना अंतरराष्ट्रीय जलक्षेत्र में हुई।

रणनीतिक महत्व

यह 2011 के PNS Babur-INS Godavari घटनाक्रम के बाद दूसरा ऐसा मामला है। घटना ग्रे-जोन रणनीति की आशंका बढ़ाती है, जिसमें बिना खुले युद्ध के दबाव बनाया जाता है। परमाणु-सशस्त्र पड़ोसियों के बीच ऐसे घटनाक्रम रोकने के लिए स्पष्ट नियम और प्रभावी संचार तंत्र आवश्यक हैं।

इजराइली बस्तियों के उत्पादों पर ब्रिटेन का प्रतिबंध

ब्रिटेन ने अधिकृत पश्चिमी तट (West Bank) में अवैध इजराइली बस्तियों से उत्पन्न सभी वस्तुओं के आयात पर प्रतिबंध लगाया है। इसके साथ बस्ती विस्तार से जुड़ी सेवाओं, वित्तीय सहायता और कुछ निर्यात लाइसेंस पर भी प्रतिबंध लगाए जाएंगे तथा हिंसक बस्ती संगठनों पर प्रतिबंध बढ़ेंगे।



विरासत एवं संस्कृति

शेखावाटी हवेलियाँ UNESCO की संभावित सूची में शामिल

यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थलों की संभावित सूची (Tentative List) में राजस्थान के 'शेखावाटी के चित्रित हवेली नगर' शामिल हुए हैं। इस क्रमिक नामांकन में झुंझुनू, चूरू और सीकर के 14 शहरों की ऐतिहासिक इमारतों व स्थापत्य धरोहरों को नामांकित किया गया है।

मुख्य बिंदु

- ❖ **संभावित सूची:** यह नामांकन 1 जून, 2026 को UNESCO में भारत के स्थायी प्रतिनिधिमंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया था।
 - ✦ संभावित सूची में शामिल होना UNESCO की विश्व धरोहर सूची में संभावित रूप से शामिल किये जाने की दिशा में एक प्रारंभिक कदम है; इससे स्वयं विश्व धरोहर का दर्जा प्राप्त नहीं होता।
- ❖ **14 ऐतिहासिक नगर:** इस क्रमिक नामांकन में अलसीसर, बिसाऊ, चिड़ावा, चूरू, डूंडलोद, फतेहपुर, झुंझुनू, खेतड़ी, लक्ष्मण गढ़, मंडावा, महनसर, नवलगढ़, रामगढ़ और सीकर शामिल हैं।
- ❖ **विशिष्ट भित्तिचित्र:** शेखावाटी अपनी समृद्ध रूप से चित्रित हवेलियों के लिये प्रसिद्ध है। इन पर बने भित्तिचित्रों में पौराणिक कथाएँ, धार्मिक विषय, दैनिक जीवन, ऐतिहासिक घटनाएँ, वनस्पति एवं जीव-जंतु, औपनिवेशिक संपर्क तथा रेलवे जैसी तकनीकी प्रगति को दर्शाया गया है।
- ❖ **व्यापारिक विरासत:** यह क्षेत्र मारवाड़ी व्यापारी समुदायों और लंबी दूरी के व्यापार के एक महत्वपूर्ण केंद्र के रूप में विकसित हुआ।
- ❖ **UNESCO मानदंड:** इस नामांकन को मानदंड (iii), (iv) और (v) के तहत प्रस्तावित किया गया है। ये क्रमशः किसी सांस्कृतिक परंपरा के असाधारण प्रमाण, किसी प्रकार की इमारत/बस्ती के उत्कृष्ट उदाहरण तथा पर्यावरण के अनुरूप पारंपरिक मानव बस्ती या भूमि-उपयोग से संबंधित हैं।
- ❖ **संरक्षण और पर्यटन:** UNESCO की मान्यता की प्रक्रिया शेखावाटी के ऐतिहासिक नगर-दृश्यों के विरासत संरक्षण, पुनर्स्थापन, सतत पर्यटन और अंतरराष्ट्रीय पहचान को सशक्त करने के प्रयासों को बढ़ावा दे सकती है।

दक्षिण कन्नड़ और उडुपी में तुलु को प्रशासनिक मान्यता

कर्नाटक मंत्रिमंडल ने 18 सितंबर 2026 को तुलु को दक्षिण कन्नड़ और उडुपी जिलों के लिए राज्य की दूसरी अतिरिक्त प्रशासनिक भाषा के रूप में मंजूरी दे दी। यह फैसला मंगलुरु में हुई कैबिनेट बैठक के बाद लिया गया और इसके साथ तुलु के प्रशासनिक उपयोग, अनुवाद और प्रशिक्षण के लिए हर साल 82 लाख रुपये का प्रावधान भी तय किया गया।

तुलु को मिली प्रशासनिक पहचान

सरकारी निर्णय के अनुसार, तुलु का उपयोग अब दोनों जिलों के प्रशासनिक कामकाज में किया जाएगा। इसमें सरकारी पत्राचार, अनुवाद संबंधी कार्य और कर्मचारियों के प्रशिक्षण जैसी प्रक्रियाएँ शामिल होंगी। यह कदम खास तौर पर तटीय कर्नाटक में लंबे समय से उठ रही उस मांग की दिशा में महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिसमें तुलु को औपचारिक प्रशासनिक मान्यता देने की बात की जा रही थी।

भाषाई और क्षेत्रीय महत्व

- ❖ तुलु एक द्रविड़ भाषा है, जिसका दर्ज इतिहास 2,000 वर्ष से अधिक पुराना बताया जाता है। दुनिया भर में इसे लगभग एक करोड़ लोग बोलते हैं। इसका प्रमुख उपयोग अविभाजित दक्षिण कन्नड़ और उडुपी क्षेत्र में होता रहा है, जो कर्नाटक के तटीय हिस्से की भाषाई विविधता को दर्शाता है।
- ❖ कर्नाटक के तटीय जिलों में कई भाषाएँ और बोलियाँ प्रचलन में हैं, इसलिए प्रशासनिक स्तर पर भाषा की मान्यता स्थानीय लोगों तक सरकारी सेवाओं की पहुँच को आसान बना सकती है। इस फैसले को क्षेत्रीय पहचान और भाषा संरक्षण के लिहाज से भी अहम माना जा रहा है।

नीतिगत पृष्ठभूमि और आगे की प्रक्रिया

तुलु को दूसरी आधिकारिक भाषा बनाने के प्रस्ताव की जाँच के लिए तत्कालीन भाजपा सरकार ने 2023 विधानसभा चुनाव से पहले अकादमिक मोहन अल्वा की अध्यक्षता में एक समिति गठित की थी। मौजूदा निर्णय उसी लंबे विचार-विमर्श और मांग की परिणति है। अब जिला प्रशासन को इस फैसले को लागू करना होगा, ताकि आधिकारिक कामकाज में तुलु के उपयोग की व्यवस्था बन सके।

प्रमुख तथ्य

- ❖ तुलु द्रविड़ भाषा परिवार की भाषा है; इसी परिवार में कन्नड़, तमिल, तेलुगु और मलयालम भी शामिल हैं।
- ❖ यह फैसला केवल दक्षिण कन्नड़ और उडुपी जिलों पर लागू होगा, पूरे कर्नाटक पर नहीं।
- ❖ तुलु के प्रशासनिक उपयोग के लिए राज्य सरकार ने सालाना 82 लाख रुपये का प्रावधान किया है।
- ❖ मंगलुरु कर्नाटक के तटीय क्षेत्र का प्रमुख शहर है और इसी शहर में कैबिनेट बैठक हुई।
- ❖ यह निर्णय कर्नाटक के तटीय क्षेत्र की भाषाई पहचान को औपचारिक मान्यता देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है और इससे स्थानीय प्रशासन में तुलु के उपयोग को नई गति मिलने की उम्मीद है।



दक्षिण मध्य रेलवे पर कवच 4.0 की शुरुआत

भारतीय रेल ने 23 सितंबर 2026 को दक्षिण मध्य रेलवे पर कवच संस्करण 4.0 को चालू कर दिया। यह उन्नयन हैदराबाद मंडल के 108 रूट किलोमीटर लंबे मलकाजगिरी-कामारेड्डी खंड पर पूरा किया गया और इसी के साथ दक्षिण मध्य रेलवे में कवच 4.0 की पहली तैनाती दर्ज हुई।

- ❖ कवच भारतीय रेल का स्वदेशी Automatic Train Protection सिस्टम है, जिसे ट्रेनों की सुरक्षा बढ़ाने के लिए विकसित किया गया है।
- ❖ इसका मुख्य उद्देश्य Signal Passing at Danger यानी एसपीएडी की स्थिति को रोकना, आपात परिस्थितियों में ट्रेन की गति नियंत्रित करना और टक्कर की आशंका को कम करना है।
- ❖ खराब मौसम या कम दृश्यता जैसी स्थितियों में भी यह प्रणाली सुरक्षित संचालन में मदद करती है।

ब्रिटेन ने बनाई पहली सैन्य अंतरिक्ष स्क्वाड्रन

ब्रिटेन ने अपनी सैन्य अंतरिक्ष क्षमता को नई दिशा देते हुए पहली स्पेस स्क्वाड्रन का गठन किया है। 23 सितंबर 2026 को घोषित इस इकाई का नाम No. III Space Effects Squadron रखा गया है।

- ❖ इसका उद्देश्य उपग्रहों की सुरक्षा, अंतरिक्ष में शत्रुतापूर्ण गतिविधियों का मुकाबला और आक्रामक तथा रक्षात्मक दोनों तरह के स्पेस ऑपरेशनों को समर्थन देना है।
- ❖ ब्रिटेन ने अंतरिक्ष को अब केवल वैज्ञानिक या तकनीकी क्षेत्र नहीं, बल्कि सीधे प्रतिस्पर्धा वाला सैन्य डोमेन माना है।
- ❖ इसी सोच के तहत नई स्क्वाड्रन को इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर क्षमताओं से लैस किया जाएगा, ताकि अंतरिक्ष में होने वाली शत्रु गतिविधियों को बाधित, कमजोर या रोका जा सके।
- ❖ इलेक्ट्रॉनिक वॉरफेयर में विद्युत-चुंबकीय स्पेक्ट्रम का उपयोग हमला, सुरक्षा और सहयोगी कार्यों के लिए किया जाता है।

DURGA योजना : महिलाओं और ट्रांसजेंडर के लिए ई-ऑटो रोजगार का नया रास्ता

दिल्ली सरकार ने महिलाओं और ट्रांसजेंडर व्यक्तियों के लिए 1,300 पिन इलेक्ट्रिक ऑटो उपलब्ध कराने वाली DURGA योजना को मंजूरी दी है।

- ❖ यह पहल एक साथ स्व-रोजगार, स्वच्छ परिवहन और सुरक्षित लास्ट-माइल कनेक्टिविटी को बढ़ावा देने के उद्देश्य से लाई गई है।
- ❖ योजना के तहत चयनित लाभार्थियों को ई-ऑटो चलाकर आजीविका कमाने का अवसर मिलेगा और राजधानी में इलेक्ट्रिक मोबिलिटी को भी गति मिलेगी।
- ❖ उद्देश्य: DURGA का पूरा नाम Driving Upliftment and Rozgar for Women/Transgender Green e-Auto है। यह योजना खास तौर पर महिलाओं और ट्रांसजेंडर समुदाय को ध्यान में रखकर तैयार की गई है।
- ❖ इसके पहले चरण में 1,170 परमिट महिलाओं के लिए और 130 परमिट ट्रांसजेंडर लाभार्थियों के लिए आरक्षित किए गए हैं।

राष्ट्रीय क्लिनिकल उत्कृष्टता सम्मान

मानसिक स्वास्थ्य, नशामुक्ति और पुनर्वास सेवाओं के क्षेत्र में काम करने वाले जागरूति रिहैबिलिटेशन सेंटर को ईटी हेल्थकेयर अवॉर्ड्स 2026 में राष्ट्रीय श्रेणी के तहत “एक्सीलेंस इन क्लिनिकल सर्विसेज - मेंटल हेल्थ एंड वेलनेस” पुरस्कार मिला है।

- ❖ यह सम्मान 11 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में दिया गया, जिसे द इकोनॉमिक टाइम्स के हेल्थकेयर प्लेटफॉर्म EHealthworld ने आयोजित किया था।
- ❖ यह पुरस्कार ऐसे समय में आया है जब मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं, नशा मुक्ति उपचार और दीर्घकालिक पुनर्वास की जरूरत लगातार बढ़ रही है।
- ❖ जागरूति रिहैबिलिटेशन सेंटर पिछले 18 वर्षों से इस क्षेत्र में काम कर रहा है और देशभर में इसके 17 से अधिक एडिक्शन रिकवरी और साइकियाट्रिक रिहैबिलिटेशन सेंटर संचालित हैं।

आयुष्मान भारत के 8 वर्ष

आयुष्मान भारत प्रधानमंत्री जन आरोग्य योजना (AB PM-JAY) ने 23 सितंबर 2026 को अपने आठ वर्ष पूरे कर लिए। 2018 में शुरू हुई यह योजना देश के गरीब और कमजोर परिवारों को कैशलेस इलाज उपलब्ध कराने की सबसे बड़ी सरकारी स्वास्थ्य बीमा योजना बन चुकी है।

- ❖ समय के साथ इसका दायरा बढ़ा है और अब यह न सिर्फ अस्पताल में भर्ती इलाज, बल्कि प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं तक भी पहुंच बना रही है।
- ❖ इस योजना के तहत पात्र परिवारों को हर वर्ष 5 लाख रुपये तक का कैशलेस स्वास्थ्य कवरेज मिलता है। यह सुविधा सेकेंडरी और टर्शियरी अस्पताल उपचार के लिए है।
- ❖ 23 सितंबर 2026 तक योजना का लाभ 60 करोड़ से अधिक लोगों तक पहुंच चुका था। 1,961 प्रक्रियाओं और 27 चिकित्सा विशेषताओं को इसमें शामिल किया गया है, जिससे गंभीर और महंगे इलाज का बोझ काफी कम हुआ है।

CSAT में सफलता की रणनीति

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC), जो भारत का एक संवैधानिक संस्थान है, प्रत्येक वर्ष सिविल सेवा परीक्षा आयोजित करता है ताकि भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS) और भारतीय पुलिस सेवा (IPS) जैसी अखिल भारतीय सेवाओं के साथ-साथ भारतीय विदेश सेवा (IFS), भारतीय राजस्व सेवा (IRS) तथा भारतीय रेलवे यातायात सेवा (IRTS) जैसी प्रतिष्ठित सेवाओं हेतु योग्य अभ्यर्थियों का चयन किया जा सके। हर वर्ष लाखों उम्मीदवार इस परीक्षा में सम्मिलित होकर अपना भाग्य आजमाते हैं, किन्तु उनमें से केवल कुछ ही छात्र इन गौरवशाली पदों तक पहुँच पाते हैं जिन्हें “राष्ट्र के वास्तुकार” (Architect of Nation) की संज्ञा दी जाती है। ‘सिविल सेवा परीक्षा’ मुख्यतः तीन चरणों – प्रारंभिक, मुख्य और साक्षात्कार – में सम्पन्न होती है।

परीक्षा के स्वरूप और प्रश्न-पत्रों का विश्लेषण

CSAT में सफलता की सटीक रणनीति

CSAT को लेकर सबसे बड़ी गलतफहमी यह है कि चूँकि यह केवल 33% क्वालिफाइंग पेपर है, इसलिए इसकी तैयारी भी केवल पास होने भर की करनी चाहिए। वास्तविकता इससे बिल्कुल अलग है।

- ❖ UPSC ने CSAT को ऐसा बनाया है जिसमें गति, तार्किक सोच, गणनात्मक क्षमता, भाषा-बोध, विकल्पों का विश्लेषण और समय-प्रबंधन एक साथ परखे जाते हैं।
- ❖ इसलिए CSAT में सफलता का पहला कदम है—परीक्षा के स्वरूप को समझना और PYQ के माध्यम से UPSC की सोच को समझना।

पहले परीक्षा को समझिए, फिर तैयारी शुरू कीजिए

CSAT अर्थात् General Studies Paper-II में 80 वस्तुनिष्ठ प्रश्न, 200 अंक और 2 घंटे का समय होता है। प्रत्येक प्रश्न 2.5 अंक का है तथा गलत उत्तर पर निर्धारित नकारात्मक अंकन लागू होता है।

- ❖ Paper-II qualifying है और न्यूनतम 33% अंक आवश्यक हैं। UPSC के अनुसार दोनों Preliminary papers में उपस्थित होना अनिवार्य है।

इसका सीधा अर्थ है:

CSAT का लक्ष्य केवल 66 अंक पाना नहीं, बल्कि 66 से नीचे जाने के जोखिम को समाप्त करना होना चाहिए।

- ❖ 33% को अपनी तैयारी का लक्ष्य न बनाइए। वह केवल UPSC की न्यूनतम सीमा है, आपकी तैयारी का लक्ष्य नहीं।

CSAT के तीन मुख्य स्तंभ

पिछले वर्षों के प्रश्नपत्र में कहा गया है कि CSAT मुख्यतः तीन बड़े खंड हैं—

1. पढ़ने की समझ
 2. मात्रात्मक योग्यता / बुनियादी संख्यात्मकता
 3. तार्किक एवं विश्लेषणात्मक तर्क
- हालाँकि इनका निश्चित वार्षिक प्रतिशत निर्धारित नहीं है। यूपीएससी

का संतुलन बदला जा सकता है। उदाहरण के लिए, 2025 में विभिन्न विश्लेषणों के अनुसार लगभग 29 समझ पर आधारित, 31-35 मात्रात्मक योग्यता और शेष तर्क शक्ति पर आधारित प्रश्न आए, जबकि 2026 में विभिन्न विश्लेषणों में लगभग 23-28 समझ पर आधारित, 26-40 संख्यात्मकता पर आधारित और शेष तर्क शक्ति पर आधारित प्रश्नों के बीच अंतर देखा गया।

- ❖ यह अंतर स्वयं एक महत्वपूर्ण राष्ट्रव्यापी संदेश देता है—किसी एक वर्ग पर प्रतिबंध लगाना खतरनाक है।

इसलिए तैयारी का सूत्र होना चाहिए:

“एक सेक्शन में महारत + बाकी सेक्शन में न्यूनतम योग्यता” नहीं, बल्कि “तीनों में सामान रूप से पकड़”।

PYQ को केवल प्रश्न नहीं, बल्कि UPSC की भाषा मानिए

CSAT की तैयारी में कम-से-कम पिछले 10-12 वर्षों के प्रश्नपत्र विषयवार और वर्षवार हल करने चाहिए।

❖ हर PYQ के लिए चार बातें लिखिए:

- + प्रश्न किस concept से आया?
- + प्रश्न में वास्तविक demand क्या थी?
- + सही उत्तर तक पहुँचने का सबसे छोटा रास्ता क्या था?
- + मेरी गलती concept, calculation, comprehension या time-management में कहाँ हुई?

विशेष रूप से 2024, 2025 और 2026 के प्रश्न पत्रों को अलग स्तर पर अध्ययन करें, क्योंकि हाल के प्रश्न पत्रों ने यह स्पष्ट किया है कि केवल आसान अंकगणित (arithmetic) और सामान्य comprehension से काम नहीं चलेगा। 2026 का आधिकारिक CSAT प्रश्न पत्र UPSC की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

प्रश्नों की कठिनाई नहीं, अपनी क्षमता को पहचानिए

CSAT में सबसे महत्वपूर्ण skill हैं— प्रश्नों का चयन हर प्रश्न को तीन श्रेणियों में बाँटने की आदत डालें:

1. इस योजना का उद्देश्य 3,000 मेगावाट (MW) की फ्लोटिंग सोलर फोटोवोल्टिक परियोजनाओं को विकसित करना है।
 2. योजना के तहत, योग्य फ्लोटिंग सोलर फोटोवोल्टिक परियोजनाओं के सफल निष्पादन के बाद प्रति मेगावाट 1 करोड़ की केंद्रीय वित्तीय सहायता (CFA) प्रदान की जाती है।
 3. यह योजना जलाशयों और औद्योगिक तालाबों के उपयोग को बढ़ावा देती है, जिससे दुर्लभ भूमि संसाधनों के लिए प्रतिस्पर्धा कम होती है।
- उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?**
- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
94. निम्नलिखित में से कौन-सा विकल्प 'प्रधानमंत्री विकसित भारत रोजगार योजना' के उद्देश्य का सबसे अच्छा वर्णन करता है?
- (a) रोजगार कार्यालयों में पंजीकृत सभी नौकरी चाहने वालों को बेरोजगारी भत्ता प्रदान करना।
(b) रोजगार सृजन को प्रोत्साहित करना, रोजगार क्षमता में सुधार करना और सभी क्षेत्रों में सामाजिक सुरक्षा को मजबूत करना।
(c) रोजगार सृजन के लिए एमएसएमई को ब्याज मुक्त ऋण प्रदान करना।
(d) असंगठित क्षेत्र के सभी श्रमिकों को सार्वभौमिक मजदूरी सहायता प्रदान करना।
95. हाल ही में खबरों में रहा 'e-Pratyanopan Portal' किसके लिए विकसित किया गया है?
- (a) अंगदान और प्रत्यारोपण के लिए एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म तैयार करना
(b) ई-कोर्ट मिशन मोड प्रोजेक्ट के तहत न्यायिक रिकॉर्ड का डिजिटलीकरण करना
(c) राष्ट्रीय डिजिटल रजिस्ट्री के माध्यम से महिला संचालित स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा देना
(d) एक केंद्रीकृत ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से साइबर अपराध रिपोर्टिंग को मजबूत करना
96. 'ज्ञान भारतम् मिशन' (Gyan Bharatam Mission) के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?
1. यह भारत की पांडुलिपि विरासत के सर्वेक्षण, प्रलेखन, डिजिटलीकरण और प्रसार के लिए संस्कृति मंत्रालय की एक पहल है।
2. इसका उद्देश्य भारत की पांडुलिपि विरासत का एक राष्ट्रीय डिजिटल भंडार बनाना है।
- नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:**
- (a) केवल 1 (b) केवल 2 (c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1, न ही 2
97. 'गुड सेमरिपजंद योजना' के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. यह योजना सड़क दुर्घटना पीड़ितों की मदद के लिए राहगीरों को प्रोत्साहित करने हेतु 2021 में सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय द्वारा शुरू की गई थी।
2. योजना के तहत, दुर्घटना पीड़ित को 'गोल्डन आवर' के दौरान अस्पताल पहुंचाने में मदद करने वाले व्यक्ति को 25,000 के इनाम का प्रावधान है।
3. 'गोल्डन आवर' गंभीर सड़क दुर्घटना के बाद के पहले 10 मिनट की अवधि को संदर्भित करता है।
- उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?**
- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2 और 3
(c) केवल 1 और 3 (d) 1, 2 और 3
98. राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार (NGRA) निम्नलिखित में से किस योजना के तहत प्रदान किए जाते हैं?
- (a) राष्ट्रीय पशुधन मिशन (b) राष्ट्रीय गोकुल मिशन
(c) डेयरी विकास के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम
(d) पशुधन स्वास्थ्य और रोग नियंत्रण कार्यक्रम
99. हाल ही में चर्चा में रहा 'राष्ट्रीय युवा संसद योजना (NYPS) 2.0' निम्नलिखित में से किस मंत्रालय की एक पहल है?
- (a) युवा मामले और खेल मंत्रालय (b) संसदीय कार्य मंत्रालय
(c) शिक्षा मंत्रालय (d) संस्कृति मंत्रालय
100. कंटेनरों और कंटेनर मैनुफैक्चरिंग असिस्टेंस स्कीम (CMAS) के संबंध में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:
1. एक 40-फीट का कंटेनर दो TEUs का प्रतिनिधित्व करता है।
2. कंटेनरीकरण सामान को बिना उतारे और पुनः पैक किए जहाजों, रेल और सड़कों के बीच ले जाने की अनुमति देकर इंटरमॉडल परिवहन को सुगम बनाता है।
3. सुरक्षित कंटेनरों के लिए अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन कंटेनरों से संबंधित अंतरराष्ट्रीय स्तर पर स्वीकृत सुरक्षा मानकों को स्थापित करता है।
4. सीएससी सम्मेलन मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय कंटेनर आवाजाही के लिए एक समान माल ढुलाई दरों (Freight rates) को निर्धारित करता है।
- उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?**
- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 2, 3 और 4
(c) केवल 1, 2 और 3 (d) केवल 1, 3 और 4

उत्तरमाला

1. (a)	2. (b)	3. (b)	4. (c)	5. (a)	6. (b)	7. (a)	8. (b)	9. (b)	10. (b)
11. (b)	12. (b)	13. (b)	14. (a)	15. (d)	16. (d)	17. (a)	18. (a)	19. (a)	20. (a)
21. (a)	22. (a)	23. (d)	24. (d)	25. (d)	26. (c)	27. (a)	28. (b)	29. (d)	30. (b)
31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (a)	35. (a)	36. (a)	37. (b)	38. (b)	39. (a)	40. (c)
41. (a)	42. (a)	43. (b)	44. (c)	45. (c)	46. (a)	47. (a)	48. (a)	49. (a)	50. (a)
51. (a)	52. (b)	53. (c)	54. (a)	55. (a)	56. (a)	57. (b)	58. (c)	59. (a)	60. (a)
61. (b)	62. (d)	63. (b)	64. (a)	65. (b)	66. (d)	67. (a)	68. (c)	69. (a)	70. (a)
71. (a)	72. (a)	73. (c)	74. (a)	75. (a)	76. (b)	77. (a)	78. (a)	79. (b)	80. (d)
81. (b)	82. (b)	83. (b)	84. (b)	85. (c)	86. (d)	87. (c)	88. (c)	89. (d)	90. (c)
91. (c)	92. (a)	93. (b)	94. (b)	95. (a)	96. (c)	97. (a)	98. (b)	99. (b)	100. (d)

सामान्य अध्ययन (CSAT) मॉडल टेस्ट पेपर - 1

निम्नलिखित 5 (पाँच) प्रश्नों के लिए निर्देश:

इस खंड में प्रत्येक प्रश्नांश में एक प्रश्न है जिसके बाद दो कथन दिए गए हैं। निम्नलिखित अनुदेशों का उपयोग कर प्रत्येक प्रश्नांश का उत्तर दीजिए:

- इस विकल्प का चयन कीजिए, यदि प्रश्न का उत्तर इन कथनों में से केवल एक का उपयोग कर दिया जा सकता है, किन्तु दूसरे कथन का उपयोग कर नहीं दिया जा सकता है।
- इस विकल्प का चयन कीजिए, यदि प्रश्न का उत्तर दोनों में से केवल किसी भी एक कथन का उपयोग कर दिया जा सकता है।
- इस विकल्प का चयन कीजिए, यदि प्रश्न का उत्तर दोनों कथनों का एक साथ उपयोग कर दिया जा सकता है, किन्तु दोनों में से केवल किसी भी एक कथन का उपयोग कर नहीं दिया जा सकता है।
- इस विकल्प का चयन कीजिए, यदि प्रश्न का उत्तर दोनों में से किसी भी कथन का उपयोग कर नहीं दिया जा सकता है।

- किसी व्यक्ति P को विभिन्न मूल्यवर्ग: 2, 5, 10, 20 और 50 में से चुने गए चार भिन्न सिक्के प्राप्त होते हैं। यदि प्राप्त सिक्कों का कुल मूल्य S है, तो क्या P के पास 10 मूल्यवर्ग का सिक्का है?

कथन I: S, 7 से विभाज्य है।

कथन II: S के इकाई का अंक 7 है।

- दो भिन्न वास्तविक संख्याओं a और b के लिए, इनमें से कौन-सी बड़ी है?

कथन I: $a^3 < b < 1$

कथन II: $b < a^{1/3} < 1$

- यदि x और y धनात्मक पूर्णांक हैं, तो क्या x एक सम पूर्णांक है?

कथन I: $3x + 4y$, 6 से विभाज्य है।

कथन II: $2x + 5y$, 4 से विभाज्य है।

- A धनात्मक विषम संख्याओं का समुच्चय है जबकि B धनात्मक सम संख्याओं का समुच्चय है। एक संचय C में जो संख्याएँ हैं, वे सभी या तो A में से हैं या B में से हैं। क्या C की प्रत्येक संख्या A में से है?

कथन I: C की सभी संख्याओं का गुणनफल विषम है।

कथन II: C में सम्मिलित किन्हीं दो संख्याओं का योग सम है।

- यदि x, y और z पूर्णांक हैं, जिनमें से प्रत्येक 1 से बड़ा है, तो क्या x एक अभाज्य संख्या है?

कथन I: $xy = 65$

कथन II: $xz = 91$

आगे आने वाले 2 (दो) प्रश्नों के लिए निर्देश:

निम्नलिखित परिच्छेद को पढ़िए और इसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आपके उत्तर पूरी तरह इस परिच्छेद पर ही आधारित होने चाहिए।

परिच्छेद

- भारत की ऐतिहासिक सीढ़ीदार बावड़ियाँ—जिन्हें गुजरात में 'वाव' और उत्तर भारत में 'बावली' के नाम से जाना जाता है—भूमिगत जल जलाशयों के अपने प्रत्यक्ष उपयोगितावादी कार्य से कहीं आगे थीं। व्यापारिक मार्गों और शुष्क ग्रामीण परिधियों में निर्मित ये स्थापत्य चमत्कार जीवंत नागरिक आश्रय-स्थलों के रूप में विकसित हुए, जहाँ भूमिगत सूक्ष्म-जलवायु मौसमी भूषण गर्मी से राहत प्रदान करती थी। सीढ़ियों का नीचे की ओर उतरना केवल जलीय मौसमी उतार-चढ़ाव से निपटने का इंजीनियरिंग समाधान मात्र नहीं था, बल्कि एक सौंदर्यात्मक तीर्थयात्रा थी, जिसके दोनों ओर विविध पौराणिक कथाओं को दर्शाने वाले नक्काशीदार मंडप बने थे। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि ये बावड़ियाँ लैंगिक आधार पर महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्थल थीं; वे उन गिने-चुने संस्थागत क्षेत्रों में से थीं जहाँ पानी भरने का दैनिक कार्य करने वाली महिलाएँ पितृसत्तात्मक निगरानी से दूर स्वतंत्र रूप से मेल-जोल कर सकती थीं। तथापि, औपनिवेशिक और स्वतंत्रता के बाद के नगर नियोजन के तहत नल द्वारा जल वितरण के केंद्रीकरण ने इन सामुदायिक जल प्रणालियों को निष्प्रभावी बना दिया, जिससे ये जीवंत सामाजिक केंद्र अतीत के उपेक्षित अवशेष मात्र बनकर रह गए।

- परिच्छेद के आधार पर निम्नलिखित में से कौन-से निष्कर्ष वैध हैं?

- बावड़ियों ने सामाजिक संपर्क के ऐसे केंद्रों के रूप में कार्य किया जिन्होंने महिलाओं के घरेलू बंधनों को अस्थायी रूप से तोड़ा।
- पारंपरिक बावड़ियों की उपेक्षा का प्राथमिक कारण स्थानीय भूजल स्तर का तेजी से कम होना था।
- बावड़ियों का वास्तुशिल्प विन्यास जल स्तर में मौसमी परिवर्तनों को समायोजित करने के लिए अभिकल्पित किया गया था।

नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- केवल 1 और 2
- केवल 2 और 3
- केवल 1 और 3
- 1, 2 और 3

- परिच्छेद के अनुसार निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही नहीं है?

- बावड़ियों का निर्माण केवल जल के व्यावहारिक संचयन और निष्कर्षण के लिए किया गया था।
- बावड़ियों में भूमिगत तापमान ने अत्यधिक परिवेशी तापमान से आश्रय प्रदान किया।

लघु संचिका

प्रायः सामान्य प्रतियोगी परीक्षाओं में नियुक्ति, निधन, पुरस्कारों, चर्चित पुस्तकों, दिवसों आदि से अत्यधिक संख्या में प्रश्न पूछे जाते हैं, जिनके लिए संक्षिप्त स्वरूप में समसामयिक घटनाक्रमों का कवरेज पर्याप्त होता है। इसे ध्यान में रखकर हम इस खंड में अति संक्षिप्त रूप में इन समसामयिक घटनाक्रमों का प्रस्तुतीकरण करते हैं।



नियुक्ति

क्र. सं.	व्यक्ति का नाम	नियुक्त पद / संगठन	मुख्य बिंदु एवं विशेष विवरण
1	संजुक्ता पराशर (IPS, 2006 बैच)	महानिरीक्षक (IG), कोबरा (CoBRA - CRPF)	सीआरपीएफ की जंगल युद्ध व उग्रवाद-रोधी विशेष इकाई 'कोबरा' की कमान संभालने वाली पहली महिला अधिकारी बनीं।
2	मंदीप के. भंडारी (IAS, 2001 बैच)	अध्यक्ष, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (CBSE)	25 सितंबर 2026 को नियुक्ति; एसीसी द्वारा अतिरिक्त सचिव के रैंक और वेतन में पदभार ग्रहण।
3	नारायण देवासी एवं स्वरूप सिंह बंजारा	सदस्य, DWBDNC	17 सितंबर 2026 को विमुक्त, घुमंतू एवं अर्ध-घुमंतू समुदायों के विकास एवं कल्याण बोर्ड (DWBDNC) के सदस्य नियुक्त (कार्यकाल: 3 वर्ष)।
4	डॉ. विनय प्रकाश सिंह (IPoS, 1988 बैच)	महासचिव, एशियाई-प्रशांत डाक संघ (APPU)	4 सितंबर 2026 को बैंकॉक में लगातार दूसरी बार निर्विरोध चुने गए। द्वितीय कार्यकाल: जनवरी 2027 से दिसंबर 2030।
5	डॉ. दिनेश शर्मा	उपराज्यपाल, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह	5 सितंबर 2026 को राष्ट्रपति द्वारा नियुक्ति। वे सेवानिवृत्त एडमिरल देवेन्द्र कुमार जोशी का स्थान लेंगे।
6	एयर मार्शल जीतेंद्र मिश्रा (सेवानिवृत्त)	पहले मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO), श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट	2 सितंबर 2026 को नियुक्ति। ट्रस्ट में स्वामी गोविंद देव गिरि नए महासचिव, महेश भागचंदका नए कोषाध्यक्ष तथा डॉ. निर्मला यादव पहली महिला ट्रस्टी बनीं।
7	एयर मार्शल संदीप थरेजा	47वें महानिदेशक, सशस्त्र बल चिकित्सा सेवा (DGAFMS)	1 सितंबर 2026 को पदभार ग्रहण। तीनों सेनाओं की चिकित्सा सहायता व्यवस्था के प्रमुख; गगनयान मिशन व भीष्म क्यूब्स वितरण में महत्वपूर्ण भूमिका।
8	एयर वाइस मार्शल शक्ति शर्मा	असिस्टेंट चीफ ऑफ एयर स्टाफ (शिक्षा), वायुसेना मुख्यालय	1 सितंबर 2026 को दो-सितारा 'एयर वाइस मार्शल' रैंक पाने वाली भारतीय रक्षा बलों की पहली महिला गैर-चिकित्सकीय अधिकारी बनीं।
9	जॉन टर्नस	मुख्य कार्यकारी अधिकारी (CEO), Apple	1 सितंबर 2026 को पदभार संभाला। टिम कुक का स्थान लिया (पूर्व में सीनियर वाइस प्रेसिडेंट ऑफ हार्डवेयर इंजीनियरिंग थे)।
10	अनिल चक्रवर्ती	प्रेसिडेंट एवं CEO, Adobe	3 सितंबर 2026 को घोषणा; 1 दिसंबर 2026 से शांतनु नारायण का स्थान लेंगे। पूर्व में इन्फॉर्मेटिका के CEO थे।
11	सुमन रे	कार्यकारी निदेशक, भारतीय रिजर्व बैंक (RBI)	1 सितंबर 2026 को नियुक्ति। पूर्व में RBI के क्षेत्रीय निदेशक (महाराष्ट्र) के रूप में कार्यरत थे।

पत्र-पत्रिका

सार संक्षेप (पॉइंटर रूप में)

योजना/कुरुक्षेत्र/डाउन टू अर्थ
(सितंबर 2026)



योजना

संपादकीय

भारत में सितंबर का पहला सप्ताह 'राष्ट्रीय पोषण सप्ताह' और पूरा महीना 'राष्ट्रीय पोषण माह' के रूप में मनाया जाता है।

- आहार विविधता और सूक्ष्म पोषक तत्वों की कमी से उत्पन्न 'छिपी हुई भूख' (Hidden Hunger) मुख्य रूप से महिलाओं, किशोरों और बच्चों के संज्ञानात्मक विकास को प्रभावित करती है।
- पशुओं (जैसे रेबीज प्रबंधन), मनुष्यों और पर्यावरण के स्वास्थ्य अंतर्संबंधों को संबोधित करने के लिए 'वन हेल्थ' (One Health) दृष्टिकोण अपनाना अनिवार्य है।
- 26 सितंबर को 'विश्व पर्यावरण स्वास्थ्य दिवस' मनाया जाता है, जिसका वर्ष 2026 का विषय "पर्यावरण स्वास्थ्य: समुदायों की सुरक्षा के लिए विज्ञान के साथ खड़े होना" है।
- आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में 'मानव माइक्रोबायोम' (Human Microbiome) जैसे उभरते क्षेत्र रोग निवारण और स्वास्थ्य सुधार के लिए नई साक्ष्य-आधारित संभावनाएं प्रस्तुत कर रहे हैं।

शिशु विकास से समृद्ध राष्ट्र भारत के जनसांख्यिकीय लाभांश की असली कुंजी

भारत का जनसांख्यिकीय लाभांश जीवन के प्रथम 6 वर्षों (प्रारंभिक बाल्यावस्था) में विकसित होने वाली स्वास्थ्य, पोषण और संज्ञानात्मक क्षमताओं पर निर्भर करता है, जो मानव पूंजी निर्माण की 'गोल्डन विंडो' है।

- महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा 0-3 वर्ष के बच्चों के मानसिक प्रोत्साहन हेतु 'नवचेतना' और 3-6 वर्ष के बच्चों की प्रारंभिक शिक्षा हेतु 'आधारशिला' नामक राष्ट्रीय पाठ्यक्रम ढाँचा विकसित किया गया है।
- 'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6' (NFHS-6: 2023-24) के अनुसार, संस्थागत प्रसव 90.6% तक पहुँच गया है, जबकि 5 वर्ष से कम उम्र के बच्चों में 'नाटापन' (Stunting) घटकर 29.3% रह गया है।
- असर (ASER) 2024 रिपोर्ट के अनुसार, ग्रामीण भारत में कक्षा 3 के बच्चों में कक्षा 2 स्तर का पाठ पढ़ने की क्षमता 2022 के 16.3% से बढ़कर 2024 में 23.4% हो गई है, जो बुनियादी साक्षरता में सुधार का संकेत है।

शिशु विकास के प्रमुख संकेतक एवं प्रगति (NFHS-5 से NFHS-6)

स्वास्थ्य / पोषण संकेतक	NFHS-5 (2019-21)	NFHS-6 (2023-24)
संस्थागत प्रसव (Institutional Delivery)	88.6%	90.6%
पूर्ण टीकाकरण (12-23 माह के बच्चे)	83.8%	87.1%
जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान	41.8%	50.1%
नाटापन (Stunting) (5 वर्ष से कम)	35.5%	29.3% (घटा है)

कुपोषण मुक्त भारत जीवन-चक्र दृष्टिकोण और संस्थागत रणनीतियाँ

भारत में एनीमिया मुक्त भारत अभियान के नए दिशा-निर्देशों में '6x6x6' रणनीति को '7x7x7' रणनीति में बदल दिया गया है, जिसमें 'जन्म के समय कम वजन वाले शिशुओं' को 7वें लाभार्थी और 'सही खान-पान' को 7वीं प्रमुख पहल के रूप में जोड़ा गया है।

- एनीमिया प्रबंधन के लिए T3 रणनीति (जांच, उपचार, परामर्श) से 'T4 रणनीति' (निगरानी को जोड़कर) की ओर बदलाव किया गया है, जिसमें गंभीर मामलों में नस के जरिए आयरन देने की चिकित्सा शामिल है।
- 'राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण-6' (NFHS-6) के अनुसार 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में बौनेपन (Stunting) की दर 35.5% से घटकर 29.3% तथा गंभीर दुबलेपन की दर 7.7% से 5.2% हो गई है।
- NFHS-6 के तथ्य-पत्र में हीमोग्लोबिन के आधार पर एनीमिया के आंकड़े शामिल नहीं किए गए हैं क्योंकि उंगली से रक्त लेने की पिछली पद्धति से एनीमिया की स्थिति श्वास्तविक से अधिक दिखाई देती थी।
- बच्चे के मस्तिष्क का लगभग 80-90% विकास जीवन के पहले 1,000 दिनों (गर्भावस्था के 270 दिन + जन्म के बाद के पहले दो वर्ष) में होता है; इस दौरान कुपोषण से होने वाली क्षति प्रायः अपरिवर्तनीय होती है।
- भारत 'दोहरे पोषण संबंधी बोझ' का सामना कर रहा है; जहाँ बच्चों में कुपोषण कम हो रहा है, वहीं 15-49 वर्ष की महिलाओं और पुरुषों में मोटापे की दर क्रमशः 30.7% और 27.3% तक बढ़ गई है।
- वर्तमान में भारत में होने वाली कुल मौतों में लगभग 63% मौतें 'गैर-संचारी रोगों' के कारण होती हैं।

खेल परिदृश्य

खेल जगत में हाल के घटनाक्रमों पर आधारित



क्रिकेट

क्र. सं.	विषय / घटना	संबंधित खिलाड़ी / टीम / संस्था	तिथि / समय	स्थान / विवरण	प्रमुख तथ्य एवं रिकॉर्ड
1	महिला T20 में सर्वाधिक रन का रिकॉर्ड	स्मृति मंधाना (भारत)	20 सितंबर, 2026	एशियाई खेल (बांग्लादेश के खिलाफ सेमीफाइनल)	- सूजी बेट्स (4,758 रन) को पीछे छोड़कर T20 में सर्वाधिक 4,788 रन बनाए। - अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में 11,000 रन पूरे करने वाली पहली भारतीय महिला खिलाड़ी बनीं। - मिताली राज (10,868 रन) का रिकॉर्ड भी तोड़ा।
2	भारत का सबसे तेज T20 शतक	अभिषेक शर्मा (भारत)	17 सितंबर, 2026	अफगानिस्तान के खिलाफ मैच	- मात्र 30 गेंदों में शतक लगाकर रोहित शर्मा (35 गेंद, 2017) का भारतीय रिकॉर्ड तोड़ा। - यह पुरुष T20 का तीसरा सबसे तेज शतक है (साहिल चौहान-27 गेंद, मुहम्मद फहद-29 गेंद के बाद)।
3	आठवाँ महिला एशिया कप 2026	भारतीय महिला क्रिकेट टीम	13 सितंबर, 2026	दुबई (संयुक्त अरब अमीरात)	- भारत ने श्रीलंका को 72 रन से हराकर रिकॉर्ड 8वीं बार खिताब जीता (भारत: 183/5, श्रीलंका: 111)। - पूरे टूर्नामेंट में अपराजित रही और लगातार 10वीं बार फाइनल में पहुँची।
4	ICC महिला चैंपियंस ट्रॉफी 2027 की मेजबानी	भारत (आयोजक) / ICC	2 सितंबर, 2026 (घोषणा)	मुंबई (CCI) और वडोदरा (आयोजन तिथि: 14-28 फरवरी 2027)	- पहली महिला चैंपियंस ट्रॉफी की मेजबानी श्रीलंका से भारत स्थानांतरित की गई। - T20 प्रारूप में 6 टीमों (भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड, न्यूजीलैंड, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका) भाग लेंगी।

हॉकी

क्र. सं.	विषय / घटना	संबंधित खिलाड़ी / टीम / संस्था	तिथि / आयोजन	स्थान / विपक्षी टीम	प्रमुख तथ्य एवं रिकॉर्ड
1	भारत की सर्वाधिक मैच खेलने वाली महिला हॉकी खिलाड़ी	सविता पूनिया (गोलकीपर)	21 सितंबर, 2026	एशियाई खेल (इंडोनेशिया के खिलाफ)	- अपना 321वां अंतरराष्ट्रीय मैच खेलकर रिकॉर्ड बनाया। - वंदना कटारिया (320 मैच) का रिकॉर्ड तोड़ा। 2009 में पदार्पण; 3 ओलंपिक और 2 एशियाई खेलों में प्रतिनिधित्व।
2	पुरुष जूनियर एशिया कप हॉकी 2026	भारतीय पुरुष जूनियर हॉकी टीम	13 सितंबर, 2026	मोकी, चीन (विपक्षी: दक्षिण कोरिया)	- फाइनल में कोरिया को 4-1 से हराकर रिकॉर्ड छठी बार खिताब जीता। - भारत प्रतियोगिता की सबसे सफल टीम है (खिताब: 2004, 2008, 2015, 2023, 2024, 2026)।

3	महिला जूनियर एशिया कप हॉकी 2026	भारतीय महिला जूनियर हॉकी टीम	13 सितंबर, 2026	मोकी, चीन (विपक्षी: चीन)	➤ फाइनल में मेजबान चीन को 1-0 से हराकर खिताबी हैट्रिक पूरी की (2023, 2024, 2026 में जीत)।
---	---------------------------------	------------------------------	-----------------	--------------------------	---

फुटबॉल

क्र. सं.	पुरस्कार का नाम	विजेता का नाम	राज्य / श्रेणी	आयोजक / प्रदाता	आयोजन तिथि व स्थल	मुख्य तथ्य एवं विवरण
1	इंडियन फुटबॉलर ऑफ द ईयर 2026	लालियानजुआला छांगटे (Lallianzuala Chhangte)	मिजोरम (पुरुष वर्ग)	फुटबॉल प्लेयर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (FPAI)	29 अगस्त, 2026 (कोलकाता)	➤ यह सम्मान दिग्गज पूर्व खिलाड़ी बाइचुंग भूटिया द्वारा प्रदान किया गया। ➤ छांगटे का यह दूसरा सम्मान है (इससे पहले 2023-24 सत्र के लिए जीता था)।
2	इंडियन विमेंस प्लेयर ऑफ द ईयर 2026	मनीषा कल्याण (Manisha Kalyan)	महिला वर्ग	फुटबॉल प्लेयर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया (श्चाए)	29 अगस्त, 2026 (कोलकाता)	➤ इसी समारोह (FPAI अवॉर्ड्स 2026) में सर्वश्रेष्ठ भारतीय महिला खिलाड़ी का पुरस्कार दिया गया।

निशानेबाजी एवं तीरंदाजी

प्रतियोगिता / आयोजन	खिलाड़ी का नाम	पदक / स्थान	स्पर्धा / वर्ग	स्थान एवं तिथि	मुख्य बिंदु / रिकॉर्ड
ह्यूंडई तीरंदाजी विश्व कप फाइनल 2026 (20वां सीजन)	धीरज बोम्मदेवरा	स्वर्ण	पुरुष रिकर्व	साल्टिलो, मेक्सिको (12-13 सितंबर, 2026)	ऐतिहासिक उपलब्धि: पुरुष रिकर्व में यह खिताब जीतने वाले पहले भारतीय। शूट-ऑफ में जापान के जुन्या नाकानिशी को हराया। (डोला बनर्जी के बाद यह खिताब जीतने वाले कुल दूसरे भारतीय)।

टेबल टेनिस एवं टेनिस

खेल	प्रतियोगिता / आयोजन	खिलाड़ी का नाम	खिताब / स्थान	स्थान एवं तिथि	मुख्य बिंदु / विवरण
टेबल टेनिस	WTT फीडर ओलंपिक 2026	अंकुर भट्टाचार्य	पुरुष एकल खिताब	ओलोमौक, चेकिया (25-30 अगस्त, 2026)	विश्व रु78 अंकुर ने फाइनल में स्लोवेनिया के डेनी कोजुल को 3-1 से हराकर अपना पहला WTT पुरुष एकल खिताब जीता।
		अंकुर भट्टाचार्य एवं आकाश पाल	पुरुष युगल खिताब	ओलोमौक, चेकिया	भारतीय जोड़ी ने फाइनल 3-1 से जीता। अंकुर ने टूर्नामेंट में दोहरा खिताब (2 स्वर्ण) अपने नाम किया।

20वां एशियाई खेल

20वां एशियाई खेल	➤ आइची प्रान्त और नागोया, जापान ➤ 9 सितंबर - 4 अक्टूबर, 2026)	➤ प्रतिभागी: 46 प्रतिनिधिमंडल, ~11,000 एथलीट, 43 खेल (469 स्वर्ण पदक स्पर्धाएं) ➤ भारतीय ध्वजवाहक: मनु भाकर (निशानेबाजी) और पवन सहरावत (कबड्डी) ➤ ऐतिहासिक संदर्भ: जापान तीसरी बार मेजबानी कर रहा है (1958 टोक्यो, 1994 हिरोशिमा के बाद)
------------------	--	---

भूगोल

1. भारतीय मृदाओं के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- (1) मरुस्थली मृदाओं का रंग लाल और भूरा होता है, इसमें उच्च वाष्पीकरण दर के कारण ह्यूमस और नमी की कमी होती है तथा निचली परतों में चूने के कंकर पाए जाने से जल का अंतः स्पंदन अवरुद्ध हो जाता है।
- (2) हिमालय के हिमाच्छादित क्षेत्रों में पाई जाने वाली वन मृदाएँ अत्यधिक उपजाऊ होती हैं क्योंकि इनमें ह्यूमस की मात्रा प्रचुर होती है तथा इनका चरित्र क्षारीय होता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से कथन सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (a)

संक्षिप्त व्याख्या: कथन 1 सही है। मरुस्थली मृदाओं का रंग लाल और भूरा होता है। शुष्क जलवायु और उच्च तापमान के कारण जल वाष्पीकरण दर अधिक होती है, जिससे ह्यूमस और नमी की मात्रा कम होती है। मृदा में नीचे की ओर कैल्शियम की मात्रा बढ़ने से चूने के कंकर की सतह पाई जाती है, जो जल के अंतः स्पंदन को बाधित कर देती है।

कथन 2 गलत है: हिमालय के हिमाच्छादित (बर्फ से ढके) क्षेत्रों में वन मृदा का बहुत अपरदन होता है। ये मृदाएँ अधिसिलिक (अम्लीय) तथा ह्यूमस रहित होती हैं, न कि क्षारीय और प्रचुर ह्यूमस वाली। (वन मृदाएँ केवल नदी घाटियों के निचले क्षेत्रों और जलोढ़ पंखों में ही उपजाऊ होती हैं)।

- ❖ **Reference:** NCERT Book Class-10, Chapter-1 (संसाधन एवं विकास),
- ❖ **Topic:** मृदाओं का वर्गीकरण,
- ❖ **Subtopic:** मरुस्थली मृदा व वन मृदा,
- ❖ **Paragraph-** 1st - 1st (Page 11)

2. पर्यावरण संरक्षण, पारंपरिक आंदोलनों और संयुक्त वन प्रबंधन के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए तथा नीचे दिए गए विकल्पों में से असत्य कथन का चयन कीजिए:

- (a) हिमालय में प्रसिद्ध 'चिपको आंदोलन' न केवल वन कटाई रोकने में सफल रहा, बल्कि इसने स्थानीय पौधों की जातियों का प्रयोग करके सामुदायिक वनीकरण अभियान को भी सफल बनाया।
- (b) टिहरी में 'बीज बचाओ अभियान' और 'नवदानव' ने यह सिद्ध किया कि रासायनिक उर्वरकों के बिना भी विविध

फसल उत्पादन द्वारा आर्थिक रूप से व्यावहारिक कृषि संभव है।

- (c) भारत में 'संयुक्त वन प्रबंधन' कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत 1988 में हुई, जब सबसे पहले उत्तराखंड राज्य ने इसका प्रस्ताव पास किया।
- (d) संयुक्त वन प्रबंधन के अंतर्गत क्षरित वनों के संरक्षण के बदले स्थानीय समुदायों को गैर-इमारती वन उत्पादों की हकदारी तथा सफल संरक्षण पर इमारती लकड़ी में हिस्सेदारी मिलती है।

उत्तर: (c) [यह कथन असत्य है]

संक्षिप्त व्याख्या: कथन 3 गलत है। भारत में 'संयुक्त वन प्रबंधन' कार्यक्रम की औपचारिक शुरुआत 1988 में हुई थी, लेकिन इसका पहला प्रस्ताव ओडिशा राज्य ने पास किया था, न कि उत्तराखंड ने।

- ❖ **Reference:** NCERT Book Class-10
- ❖ **Chapter-2** (वन एवं वन्य जीव संसाधन)
- ❖ **Topic:** समुदाय और वन संरक्षण
- ❖ **Paragraph-** 2nd, 3rd (Page 23)

3. नीचे दो कथन दिए गए हैं, जिनमें से एक को कथन (A) तथा दूसरे को कारण (R) कहा गया है:

कथन (A): अमरकंटक की पहाड़ियों से निकलने वाली नर्मदा नदी बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों की तरह अपने मुहाने पर विशाल डेल्टा का निर्माण नहीं करती, बल्कि ज्वारनदमुख (Estuary) का निर्माण करती है।

कारण (R): नर्मदा नदी मध्य प्रदेश में कठोर चट्टानों के मध्य एक भ्रंश घाटी में तीव्र ढाल के साथ बहती है, जिससे इसके पास अवसाद का निक्षेपण करने के लिए सपाट मैदान नहीं होता।

नीचे दिए गए कूट का उपयोग कर सही उत्तर चुनिए:

- (a) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
- (b) (A) और (R) दोनों सही हैं, परंतु (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
- (c) (A) सही है, किंतु (R) गलत है।
- (d) (A) गलत है, किंतु (R) सही है।

सही उत्तर: (a)

संक्षिप्त व्याख्या: कथन (A) सही है। पश्चिम की ओर बहने वाली नर्मदा एवं तापी नदियाँ डेल्टा की जगह ज्वारनदमुख बनाती हैं। कारण (R) सही है और व्याख्या करता है। नर्मदा का उद्गम अमरकंटक में है और यह पश्चिम की ओर भ्रंश घाटी में बहती है तथा जबलपुर के निकट संगमरमर के शैलों से गहरे गार्ज और 'धुआँधार प्रपात' का निर्माण करती है। तीव्र ढाल और भ्रंश घाटी में बहने के कारण समुद्र तक पहुँचते समय यह गाद का निक्षेपण नहीं कर पाती, जिससे डेल्टा के बजाय ज्वारनदमुख बनता है।

करेंट अफेयर्स वनलाइनर

सरकारी समाचार सेवाओं-PIB, AIR इत्यादि से संकलित



राष्ट्रीय

- भारत की पहली LNG-डीजल डुअल-फ्यूल DEMU ट्रेन कहाँ से रवाना की गई – साबरमती से
- वर्ल्डस्क्रिप्स शंघाई 2026 में भारत ने कितने सिल्वर मेडल जीते और कौन-सा स्थान प्राप्त किया? – 6 सिल्वर मेडल के साथ 10वाँ स्थान (अब तक का सर्वश्रेष्ठ)
- DAHD ने राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत क्या लॉन्च किया? – बहुभाषी पशुधन बीमा पोर्टल
- कांडला पोर्ट पर 2300 करोड़ का कौन-सा प्लांट प्रस्तावित है? – 150 TPD ई-मेथनॉल प्लांट
- विदेश मंत्री एस. जयशंकर ने 25 सितंबर 2026 को किस पर हस्ताक्षर किए? – साइबर अपराध के खिलाफ संयुक्त राष्ट्र कन्वेंशन पर
- सीएसआईआर ने 26 सितंबर 2026 को कौन-सा स्थापना दिवस मनाया? – 85वाँ स्थापना दिवस
- 2026 ऑक्सफोर्ड इकोनॉमिक्स ग्लोबल सिटीज इंडेक्स में दिल्ली का स्थान क्या है? – 268वाँ (भारतीय शहरों में सर्वोच्च)
- मणिपुर, नागालैंड और अरुणाचल प्रदेश में AFSPA कब तक बढ़ाया गया? – 1 अक्टूबर 2026 से 31 मार्च 2027 तक
- बंदरगाह मंत्रालय ने किन बंदरगाहों को मेगा पोर्ट घोषित किया? – दींदायाल, जेएनपीटी, पारादीप और मुंद्रा
- भारतीय रेलवे ने भुज से बरौनी तक कितनी किलोमीटर की अमृत भारत एक्सप्रेस को मंजूरी दी? – 2,532 किमी
- 25 सितंबर को किसकी 110वीं जयंती अंत्योदय दिवस के रूप में मनाई जा रही है – पंडित दीनदयाल उपाध्याय की
- FSSAI ने दूध रहित उत्पादों पर किस नाम के प्रयोग पर प्रतिबंध का प्रस्ताव किया – “पनीर” नाम पर
- दिल्ली कैबिनेट ने महिलाओं और ट्रांसजेंडर को पिंक इलेक्ट्रिक ऑटो देने वाली कौन-सी योजना मंजूर की? – दुर्गा योजना
- भारत की पहली सहकारी राइड-हेलिंग सेवा कौन-सी है? – भारत टैक्सी
- मारुति सुजुकी ने मानेसर में क्या चालू किया? – पहला ग्रीन हाइड्रोजन इलेक्ट्रोलाइजर प्लांट
- मिजोरम की पी लालरिथांगी को किस सूची में शामिल किया गया? – FAO की एग्रीफूड सिस्टम्स में 100 महिला हीरो
- सरकार ने लगभग 37 साल बाद किसे भंग कर दिया? – डिजिटल कम्युनिकेशंस कमीशन

- राष्ट्रीय फॉर्मूलरी ऑफ इंडिया 2026 का कौन-सा संस्करण लॉन्च किया गया? – 7वाँ संस्करण
- भारत का पहला टेलीकॉम मैनुफैक्चरिंग जोन कहाँ प्रस्तावित है? – ग्वालियर में
- टाकेंदा की क्यूडेंगा क्या है? – भारत की पहली स्वीकृत डेंगू वैक्सीन
- एन. एच. ए. आई. ने क्या सेवा शुरू की? – वनटैग फास्टैग पोर्टेबिलिटी सेवा
- लेह में दुनिया के सबसे ऊँचे जुड़वां फूलों के खेत कहाँ उद्घाटित किए गए? – चोगलमसर और स्ताकना में
- मिशन मौसम के तहत भारत का 51वाँ डॉप्लर मौसम रडार कहाँ उद्घाटित किया गया? – ओडिशा के संबलपुर में
- किशौ बांध परियोजना से जुड़ी बाधा कब दूर हुई? – 15 सितंबर 2026 को छह राज्यों द्वारा समझौते पर हस्ताक्षर से
- कुमिक को क्या घोषित किया गया? – लद्दाख का पहला हेरिटेज विलेज
- बैंकर बुक एविडेंस एक्ट 2026 कब से लागू होगा? – 1 अक्टूबर 2026 से
- ESTIC 2026 कब और कहाँ आयोजित होगा? – 27-29 अक्टूबर को नई दिल्ली के भारत मंडपम में
- स्वीडिश चैंबर ऑफ कॉमर्स के 2026 ग्लोबल बिजनेस क्लाइमेट सर्वे में भारत का स्थान क्या है? – 41 बाजारों में पहला स्थान

अंतरराष्ट्रीय

- ब्रिक्स कर प्राधिकरण प्रमुखों की बैठक कहाँ और किसकी अध्यक्षता में संपन्न हुई? – नई दिल्ली में भारत की अध्यक्षता में
- भारत-न्यूजीलैंड मुक्त व्यापार समझौता (FTA) कब से प्रभावी होगा? – 20 अक्टूबर 2026 से
- अमेरिका ने किसके साथ स्थायी सुरक्षा समझौते की घोषणा की? – डेनमार्क और ग्रीनलैंड के साथ
- सी. ओ. व्यापार मंत्रियों की 25वीं बैठक कहाँ हुई? – दुशांबे में
- बोलीविया के युंगास बादल वन में नई जीवित बिल्ली प्रजाति का क्या नाम है? – लेओपर्डस तिलकायो
- गिफ्ट सिटी जीएफसीआई 40 में वैश्विक स्तर पर कौन-सा स्थान पर है? – 37वाँ स्थान
- 69वां कॉमनवेल्थ संसदीय सम्मेलन कहाँ चल रहा है? – केप टाउन में

समसामयिक प्रश्न

सितम्बर 2026 के घटनाक्रम पर आधारित



1. भारत के डिजिटल भूमि-शासन ढाँचे (Digital Land-Governance Framework) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. ULPIN व्यक्तिगत भूमि भूखंडों (Land Parcels) को एक विशिष्ट भू-स्थानिक पहचान (Geospatial Identity) प्रदान करता है।
2. भारत लैंड स्टैक (Bharat Land Stack) का उद्देश्य भू-स्थानिक भूमि जानकारी को स्वामित्व, पंजीकरण, भार (Encumbrance) और मुकदमेबाजी (Litigation) से संबंधित रिकॉर्ड के साथ एकीकृत करना है।
3. NAKSHA मुख्य रूप से शहरी भूमि भूखंडों के आधुनिक भू-स्थानिक मानचित्रण से संबंधित है।
4. भूमि अभिलेखों का डिजिटलीकरण अपने आप में भूमि से जुड़ी मुकदमेबाजी की संभावना को पूरी तरह समाप्त कर देता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 3 (b) केवल 2 और 4
(c) केवल 1, 2 और 3 (d) 1, 2, 3 और 4

2. प्रधानमंत्री जन धन योजना (PMJDY) के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. 'प्रत्येक परिवार' को खाता प्रदान करने से 'प्रत्येक बैंक-रहित वयस्क' की ओर बदलाव, बुनियादी पहुँच से व्यापक व्यक्तिगत-स्तर के वित्तीय समावेशन की ओर कदम को दर्शाता है।
2. बिजनेस कॉरिस्पोंडेंट्स (Business Correspondents) पारंपरिक बैंक शाखा नेटवर्क से परे बुनियादी बैंकिंग सेवाओं का विस्तार कर सकते हैं।
3. PMJDY खाते सामाजिक-सुरक्षा योजनाओं और प्रत्यक्ष लाभ अंतरण (Direct Benefit Transfer - DBT) दोनों के लिए एक वितरण माध्यम (Delivery Channel) के रूप में कार्य कर सकते हैं।
4. JAM आर्किटेक्चर लाभों के अधिक लक्षित वितरण को सुगम बनाने के लिए बैंक खातों, आधार और मोबाइल कनेक्टिविटी को जोड़ता है।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-से सही हैं?

- (a) केवल 1 और 2 (b) केवल 1, 2 और 3
(c) केवल 2, 3 और 4 (d) 1, 2, 3 और 4

3. 'समर्थक' (Samarthak) का शामिल होना निम्नलिखित में से किस दृष्टिकोण से सबसे अधिक महत्वपूर्ण है?

- (a) विशेष नौसैनिक प्लेटफार्मों को विशेष रूप से युद्ध अभियानों के लिए समर्पित एक एकल पोत से बदलना

- (b) एक स्वदेशी, बहुमुखी प्लेटफॉर्म का निर्माण करना जो निगरानी, गश्त और HADR (मानवीय सहायता और आपदा राहत) सहित कई समुद्री गतिविधियों का समर्थन करने में सक्षम हो

- (c) लंबी अवधि की पानी के भीतर निगरानी के लिए एक परमाणु-संचालित प्लेटफॉर्म विकसित करना

- (d) बड़े विमानन जहाजों के स्वदेशी निर्माण के माध्यम से भारत के विमान वाहक बेड़े का विस्तार करना

4. पुनर्गठित PM स्वनिधि (PM SVANidhi) योजना के संदर्भ में, निम्नलिखित में से कौन-सा इसके व्यापक नीतिगत रुझान को सबसे अच्छी तरह दर्शाता है?

- (a) बिना गारंटी के ऋण (Collateral-free Credit) से आगे बढ़कर औपचारिक ऋण, डिजिटल वित्तीय समावेशन, सामाजिक सुरक्षा और उद्यमिता की ओर बढ़ना

- (b) सभी शहरी अनौपचारिक श्रमिकों के लिए कार्यशील पूंजी ऋण को प्रत्यक्ष आय सहायता से बदलना

- (c) इस योजना को केवल उन रेहड़ी-पटरी वालों तक सीमित रखना जिनके पास पहले से ही औपचारिक बैंक खाते और डिजिटल भुगतान सुविधाएँ हैं

- (d) इस योजना को केंद्रीय क्षेत्र की संरचना से राज्य-वित्तपोषित शहरी आजीविका कार्यक्रम में स्थानांतरित करना

5. हाल ही में खबरों में रहा, हिम तेंदुए (Snow Leopard) के संरक्षण पर रूस के साथ भारत का सहयोग महत्वपूर्ण है क्योंकि यह निम्नलिखित में से किस दृष्टिकोण को रेखांकित करता है?

- (a) हिम तेंदुए की आबादी को बहाल करने के लिए मुख्य रणनीति के रूप में बंदी प्रजनन (Captive Breeding) के माध्यम से बाह्य-स्थाने संरक्षण (Ex-situ Conservation)

- (b) मुख्य रूप से सभी उच्च-ऊँचाई वाले हिमालयी परिदृश्यों में मानवीय पहुँच को सीमित करने पर आधारित संरक्षण

- (c) प्रजातियों के संरक्षण के लिए जनसंख्या आकलन, रेडियो टेलीमेट्री और आनुवंशिक विश्लेषण (Genetic Analysis) जैसे वैज्ञानिक उपकरणों का उपयोग

- (d) हिम तेंदुए के संरक्षण को मुख्य रूप से अंतरराष्ट्रीय वन्यजीव व्यापार को विनियमित करने के एक तंत्र के रूप में देखना

6. भारत के चीनी उद्योग के संदर्भ में, निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

1. गन्ने आधारित एथेनॉल उत्पादन से अतिरिक्त चीनी के संचय को कम करने में मदद मिल सकती है और साथ ही चीनी मिलों की तरलता (Liquidity) स्थिति में सुधार हो सकता है।